इकाई 2 विद्यालय में निर्देशन

इकाई की रूपरेखा

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 निर्देशन तथा पाठ्यचर्या

- 2.3.1 पाठ्यचर्या की अवधारणा
- 2.3.2 संगत व सार्थक पाठ्यचर्या के मानदंड
- 2.3.3 निर्देशन तथा पाठ्यचर्या का समाकलन
- 2.3.4 विद्यालयी पाठ्यचर्या द्वारा निर्देशन

2.4 निर्देशन तथा अधिगम

- 2.4.1 अधिगम प्रक्रिया की प्रकृति
- 2.4.2 अधिगम सामग्री तथा अध्यापक का महत्व
- 2.4.3 अध्येता का महत्व
- 2.4.4 कक्षा अधिगम तथा निर्देशन में निहित मनोवैज्ञानिक कारक

2.5 निर्देशन तथा अनुशासन

- 2.5.1 कक्षा अनुशासन तथा निर्देशन विधियाँ
- 2.5.2 व्यवहार तथा अनुचित व्यवहार (दुर्व्यवहार)
- 2.5.3 अनुशासित करने की नई विधियाँ

2.6 निर्देशन और अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्र

2.7 निर्देशन और यथातथ्य (आभासी) जगत

2.8 सारांश

2.9 इकाई के अंत में अभ्यास कार्य

2.1 प्रस्तावना

कक्षा कक्ष में निर्देशन तथा श्रेष्ठ अध्यापन अभिन्न प्रक्रियाएँ हैं। अच्छे अध्यापक सदैव अधिकांश वे क्रियाएँ ही करते हैं जिन्हें निर्देशन की संज्ञा दी जाती है। वे पाठ्यचर्या, शिक्षण या अधिगम की विधियों तथा अनुशासन को बालक के विकास के साधनों के रूप में प्रयोग में लाते हैं।

इकाई 'निर्देशन तथा उपबोधन को समझना', के अध्ययन करने के पश्चात आप निर्देशन तथा उपबोधन की अवधारणाओं तथा इनके शैक्षिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों में निहितार्थ को समझ गए होंगे। आइए, इस इकाई में हम कक्षा में पढ़ाए गए विषयों की प्रासंगिकता के रूप में निर्देशन के उपयोगों को समझें और यह देखें कि इन विषयों को कैसे पढ़ाया जाए तथा कक्षा का प्रबंधन किस भांति किया जाए। हम यह भी चर्चा करेंगे कि पाठ्यचर्या के माध्यम से निर्देशन द्वारा बच्चों की आवश्यकताओं को कैसे पूरा किया जा सकता है। बच्चों की भावात्मक ज़रूरतें और विकास से निपटने के लिए उपबोधन कला, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा का प्रयोग कैसे कर सकते हैं, अनुशासन को कैसे सुधारा जा सकता है और एक निर्देशन-मनस्क (guidance minded) अध्यापक अपने विद्यार्थियों की बेहतर ढंग से सीखने में कैसे सहायता कर सकता है।

2.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप इस योग्य हो जाएँगे कि :

- निर्देशन के लक्ष्यों तथा पाठ्यचर्या के बीच समानताओं तथा विभेदों को पहचान सकेंगे,
- विद्यालय में सहपाठ्यचारी क्रियाओं की आवश्यकताओं के महत्त्व को बता सकेंगे,
- अध्यापन में अधिगम के कुछ मूलभूत सिद्धांतों का उपयोग कर सकेंगे,
- कक्षा की स्थिति में अनुशासन स्थापित करने के लिए निर्देशन के महत्त्व को व्यक्त कर सकेंगे, और
- निर्देशन के महत्त्व को समझ सकेंगे।

2.3 निर्देशन तथा पाठ्यचर्या

इस बात पर बार-बार बल दिया गया है कि निर्देशन सेवाएँ विद्यालय का अभिन्न हिस्सा होती हैं (देखें इकाई 1, निर्देशन और उपबोध को समझना)। परन्तु दुर्भाग्य यह रहा है कि पाठ्यचर्यात्मक विषयों में निर्देशन कार्यक्रमों का उपयोग बहुत ही कम विद्यालय कर पाएं हैं।

परंपरागत रूप में, निर्देशन कार्य का महत्व व्यक्ति की समायोजन प्रक्रिया (adjustment process) से संबंधित रहा है। विद्यालयों के संदर्भ में इसका उद्देश्य विद्यमान पाठ्यचर्या से विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकताओं तथा योग्यताओं के अनुसार उपयुक्त विषयों के चयन में कैसे सहायता करना है। अतः यह इकाई निर्देशन कर्मियों (guidance personnel) के ज्ञान तथा प्रशिक्षण के उपयोग की संभावनाओं का पता लगाने तथा उनके द्वारा किए जाने वाले प्रयासों के परिणामों को किसी अन्य उपयुक्त दिशा में (जैसे, स्वयं पाठ्यचर्या निर्माण तथा इसमें सुधार लाना) प्रयोग में लाने के लिए समर्पित हैं।

2.3.1 पाठ्यचर्या की अवधारणा

शैक्षिक दृष्टि से, ''पाठ्यचर्या विद्यार्थियों के समग्र अनुभवों का संकलन/निष्कर्ष/परिणाम है चाहे वे अनुभव औपचारिक हों अथवा अनौपचारिक, और चाहे वे कक्षा के अंदर प्राप्य हों तथा बाहर''।

निर्देशन की दृष्टि से पाठ्यक्रमों को विद्यालय द्वारा प्रदत्त 'सुनियोजित' अधिगम (शिक्षण) अनुभवों के रूप में देखा गया है। इस बात को निश्चित रूप से मान लेना चाहिए कि विद्यार्थी अपने समस्त अनुभवों से सीखते हैं, मात्र कक्षा के अंदर प्राप्त अनुभवों से ही नहीं। उदाहरण के लिए सह-पाठ्यचारी कार्यकलापों द्वारा प्रदत्त शिक्षण या अधिगम अनुभव नियमित कक्षा में दिए गए अनुभवों से भिन्न होते हैं।

व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति करना (Meeting individual needs) : विद्यालय की पाठ्यचर्या ऐसी हो जो विद्यार्थियों की आवश्यकताओं का निर्वाह अवश्य कर सके। एक प्रकार से, पाठ्यचर्या विद्यालयी क्रियाकलापों की सीमाओं को निश्चित करती है। यह एक महत्त्वपूर्ण योगदान है क्योंकि प्रत्येक समुदाय में वे सेवाएँ – जिनसे विद्यार्थी लाभान्वित हो सकता है इतनी विविध व अलग-अलग प्रकार की होती हैं कि इन सभी को विद्यालय द्वारा

किया जाना असंभव प्रतीत होता है। अतः विद्यालय मात्र उन कार्यकलापों को ही चुनें जिन्हें प्रदान करने में यह मुख्य दायित्व निभा सकने में सक्षम हों।

अतः पाठ्यचर्या विद्यार्थियों को निम्नलिखित बातों के लिए निश्चित अवसर प्रदान करने में सक्षम होनी चाहिए : (i) जीवन में अपना स्थान खोजना ताकि जीवन दर्शन स्पष्ट हो सके, (ii) समकक्ष (peer) के साथ संतोषजनक संबंध स्थापित करना, (iii) परिवार से स्वतंत्र होना (उन पर आश्रित न होना) तथा (iv) शारीरिक वृद्धि और परिवर्तनों से समायोजन करना।

2.3.2 संगत व सार्थक पाठ्यचर्या के मानदंड

विद्यार्थियों की उपरोक्त आवश्यकताओं के निर्वहन के लिए हमारे विद्यार्थियों के शैक्षणिक कार्यक्रम ऐसे हों कि वेः (1) युवकों की आवश्यकताओं के अनुकूल हों, (2) हमारी सामाजिक व्यवस्था की आवर्ती (बार-बार आने वाली) माँगों व जरूरतों को पूरा कर सकें, तथा (3) अधिगम प्रक्रिया के साथ सामंजस्य स्थापित करके (in harmony with) विकसित किए जाएँ।

1) **युवाओं की आवश्यकताएँ** : यह प्रथम मानदंड विद्यार्थियों की सामान्य (सामूहिक) आवश्यकताओं और विशिष्ट या व्यक्तिगत आवश्यकताओं से संबंधित है।

   क) सामान्य या सामूहिक आवश्यकताएँ : सभी विद्यार्थियों की कुछ सामूहिक या साझी मूलभूत आवश्यकताएँ होती हैं; जैसे, सभी नागरिक हैं; लगभग सभी विवाह करेंगे तथा परिवारों का पालन-पोषण करेंगे; सभी जीवनयापन के लिए कमाएंगे, सभी आपस में मिलते जुलते रहेंगे और अन्य व्यक्तियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करेंगे, इत्यादि।

   ख) विशिष्ट आवश्यकताएँ : इन सामूहिक आवश्यकताओं के अतिरिक्त, कुछ व्यक्तिगत आवश्यकताएँ अथवा रुचियाँ होती हैं, जैसे : कुछ विद्यार्थी कालेज में प्रवेश लेकर अपने अध्ययन को जारी रखना चाहेंगे; कुछ विद्यार्थी किसी न किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में प्रवेश लेना चाहेंगे, कुछ अपने पैतृक कारोबार को चलाएँगे, तथा कुछ ऐसे भी होंगे जो किसी व्यावसायिक (professional) पाठ्यचर्या में प्रवेश लेना चाहेंगे जैसे मेडिकल कालेज, इंजीनियरिंग या वास्तुकला। सामान्य आवश्यकताओं को तो आसानी से पहचाना जा सकता है और उनकी पूर्ति विभिन्न 'अध्ययन पाठ्यक्रमों' के नियोजन से की जा सकती है।

2) **अपनी सामाजिक व्यवस्था की माँगों की पूर्ति करनाः** यद्यपि बहुत सारी ऐसी आवश्यकताओं को पहचान पाना कठिन है तथापि कुछ आवश्यकताएँ बहुत ही सुस्पष्ट होती हैं। हमारा समाज यह अपेक्षा रखता है कि सभी व्यक्तियों के पास कार्यात्मक साक्षरता कौशल हो अर्थात सभी व्यक्ति अपने नाम लिखने और पढ़ने योग्य हो जाएँ। कुछ सामाजिक दबाव अधिक जटिल होते हैं, उदाहरणार्थ, चिकित्सकों से यह अपेक्षा होती हैं कि वे अपना अध्ययन स्वतंत्र रूप से जारी रखें ताकि वे चिकित्सा के क्षेत्र में होने वाले नवीनतम व आधुनिकतम शोधों से अवगत रहें।

3) **अधिगम प्रक्रिया तथा पाठ्यचर्या :** यदि हम निम्नलिखित तालिका का ध्यान से अध्ययन करें तो इस तीसरे मानदण्ड को बेहतर तरीके से समझा जा सकता हैः

एक अच्छा अधिगम अनुभव प्रदान करने के लिए आवश्यक विचारणीय बातें		इसे कैसे उपलब्ध किया जाए	निर्देशन कार्यक्रम का योगदान
1.	अनुदेशन (instruction) विद्यार्थियों की तत्परता के अनुरूप होना चाहिए।	पहले किए गए कार्य की समीक्षा	समूह-चर्चा तथा वृत्तिक वर्ताएं
2.	बच्चों की मानसिक योग्यता को ध्यान में रखा जाना चाहिए।	परीक्षण	मनोवैज्ञानिक परीक्षण तथा साक्षात्कार
3.	विद्यार्थियों को अभिप्रेरित (motivate) करना अनिवार्य है।	जरूरतों को पहचानना	व्यावसायिक सूचना प्रदान करना तथा अभिप्रेरणामूलक बातचीत
4.	जब विद्यार्थी उपयुक्त अनुक्रिया करें तो उसे प्रबलित अवश्य किया जाए।	पुरस्कार देकर	वृत्तिक मेले तथा वृत्तिक प्रदर्शनियाँ
5.	विद्यार्थियों के पास कुछ ऐसे साधन अवश्य हों जिनसे वे अपनी अनुक्रियाओं की उपयुक्तता का मूल्यांकन कर सकें।	प्रश्नावलियाँ तथा उपबोधन	स्वनिर्धारण तथा वृत्तिक पाठ्यक्रम

2.3.3 निर्देशन तथा पाठ्यचर्या का समाकलन

कक्षा निर्देशन केन्द्रों/ब्यूरो इत्यादि, प्रशासनिक कार्यक्रमों, सहपाठ्यचारी क्रियाओं, घर तथा समुदाय में प्राप्त अधिकगम-अनुभवों के प्रकाश में यह अनिवार्य हो जाता है कि निर्देशन पाठ्यचर्या का एक अभिन्न अंग होना चाहिए। आइए, अब आगे हम निर्देशन तथा पाठ्यचर्या के समाकलन के तर्काधार पर विचार करें।

1) **ध्येयों की समरूपता (समानताएँ) :** दोनों ही क्षेत्रों में प्रकार्यात्मक केन्द्र विद्यार्थी केन्द्रिक उपागम का रूप धारण कर चुकी है, और चूँकि विद्यालय में अधिकांश समय विद्यार्थी अध्यापक के साथ रहता है अतः दोनों क्षेत्रों (निर्देशन तथा पाठ्यचर्या) का एक महत्वपूर्ण ध्येय यह बन जाता है कि 'अध्यापक द्वारा इस प्रकार सहायता करना' कि यह विद्यार्थी की सीखने में, सामंजस्य स्थापित करने में तथा सक्षमता प्राप्त करने में सहायता कर सकें।

2) **कार्यों में समानता :** प्रकार्यों में कुछ महत्त्वपूर्ण समानताएँ निम्नलिखित हैं :

   क) **समग्र व्यक्ति की आवश्यकताएँ :** इस प्रकार्य का उद्देश्य है कि 'समग्र व्यक्ति' की आवश्यकताएँ (शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक तथा मानसिक) पूर्ण हो सके। इसके लिए ऐसी क्रियात्मक स्थितियों में, जैसे खेल का मैदान, सहपाठ्यचारी क्रियाएँ, सभागार, बरामदों तथा कक्षाओं में विद्यार्थियों के सक्रिय व्यवहार का अवलोकन करते रहना आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण है। अध्यापक एवं परामर्शदाता को मात्र विद्यार्थी की पृष्ठभूमि के ज्ञान संबंधी आँकड़ों तथा उसके कक्षा के निष्पादन मात्रा से ही संतुष्ट नहीं रहना चाहिए।

   ख) **विद्यार्थियों की आवश्यकताओं तथा समस्याओं को पहचानना :** यदि परामर्शदाता, पाठ्यचर्या विशेषज्ञ तथा अध्यापक अपने विशिष्ट कौशलों का अपनी अंतर्दृष्टि तथा विशेषज्ञताओं का उपयोग करते हुए सब मिलकर कार्य करें

तो युवाओं की आवश्यकताओं की पहचान करने में अधिक सार्थक परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

अधिकांशतः निर्देशन स्टाफ परामर्श (उपबोधन) को विद्यार्थियों की समस्याओं की पहचान करने के लिए एक साधन के रूप में तो चुनते है, किन्तु अधिकांश में वे इस ज्ञान को, कि विद्यार्थियों की समस्याएँ क्या होती हैं, अपने तक सीमित रखते हैं। परामर्शदाताओं द्वारा व्यक्त विशिष्ट आम समस्याएँ निम्नलिखित हैं: योग्यतानुसार उपलब्धि प्राप्त न कर सकना, सामान्य रूप से विद्यालयी पाठ्यक्रम में असफलता, घर के अंदर के मधुर संबंधों में विघटन, सामाजिक कुसमायोजन आदि। दूसरी ओर अध्यापकों द्वारा व्यक्त की गयी विद्यार्थियों की समस्याएँ हैं : परिवार में परस्पर मधुर संबंध न होना या अनुपस्थित रहने की प्रवृत्ति (absentism) तथा दिशा निर्देश (orientation) का अभाव। क्या यह अपेक्षित नहीं है कि इन सभी समस्याओं या समस्या क्षेत्रों के निराकरण के लिए समस्त अध्यापकों, परामर्शदाता समूह तथा अभिभावक परस्पर सहयोग करें, इन समस्याओं पर चर्चा करें तथा इनके समाधान में सहायता करें? इन सभी समस्याओं के निर्देशन संबंधी निहितार्थ पाठ्यचर्या तथा घर तथा समुदाय के साथ काम करने में तथा विद्यालय में और सामान्य अच्छे समूह-मनोबल के लिए होते हैं।

ग) **सभी व्यक्तियों के साथ कार्य :** निर्देशन तथा पाठ्यचर्या स्टाफ के प्रकार्य अनुपूरक होते हैं और समान व्यक्तियों, जैसे विद्यार्थियों, अभिभावकों, अध्यापकों तथा समुदाय के साथ कार्य करते हैं। पाठ्यचर्या स्टाफ तथा अध्यापकों को परामर्शदाता द्वारा दी गई सहायता मूल्यवान होती है, उदाहरणार्थ, वह उन्हें उन सभी रिकोर्डों, अभिलेखों से अवगत करा सकती है। जो उनके उपयोग के लिए निर्देशन कार्यालय में उपलब्ध हैं। परामर्शदाता विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के उन पाठ्यचर्या संबंधी तथा कार्यपरक अनुभवों को मालूम करने में सहायता कर सकती है जो समस्याओं के समाधान तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपेक्षित पृष्ठभूमि प्रदान करने में सहायक हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, ऐसे अवसर भी मिलेंगे जब किसी सम्मेलन में निर्देशन परामर्शदाता तथा अध्यापक का अभिभावकों से परस्पर एक साथ मिलना काफी लाभदायक सिद्ध हो सकता है।

3) **विषयवस्तु तथा शैक्षिक संसाधन सामग्री में समानता :** व्यावहारिक रूप से निर्देशन कार्यक्रम की समस्त विषयवस्तु विद्यार्थियों को पाठ्यचर्या अनुभव प्रदान करने में सक्षम होती है। व्यावसायिक या वृत्तिक निर्देशन, घर तथा परिवार, स्वास्थ्य तथा शारीरिक विकास, दूसरों के साथ कार्य कर सकने की योग्यता आदि जैसे विषयों को पाठ्यचर्यात्मक अनुभवों में परिवर्तित किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त, प्रायः पुस्तकालय और निर्देशन कार्यालय में निर्देशन एकक (unit) का एक सुव्यवस्थित स्थान निर्धारित होता है जिसमें पुस्तकें या अन्य उपयोगी अध्ययन सामग्री उपलब्ध होती है तथा जिसका उपयोग कक्षा में पाठ्यचर्यात्मक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लाभप्रद होता है।

4) **विद्यार्थियों के संग कार्य करने की समान कार्यविधि तथा तकनीकें :** निर्देशन तकनीकों (केस अध्ययन), साक्षात्कार, वृत्तांत अभिलेख (annedotal record), समाज-मितीय आँकड़ें (Sociometric data), समाज-नाटक (socio drama) और अन्य

सरल प्रक्षेपी तकनीकें (जैसे आत्मकथा चित्र प्रक्षेपण, कहानी-निर्माण इत्यादि) का अभ्यास आजकल बहुत सारी कक्षाओं में किया जाता है। अध्यापक सदैव से ही साक्षात्कार लेते रहे हैं तथा वे विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की शैक्षिक तथा व्यावसायिक सूचना देते रहे हैं। तथापि ऐसा देखा गया है कि अध्यापक प्रायः इन तकनीकों का उपयोग उनकी पूर्ण संभावनाओं का पता लगाए बिना करते हैं। निर्देशन कार्मिक उनमें इस बात के, प्रति पूरी समझ पैदा कर सकते हैं कि इन विधियों का उपयोग कब और कैसे किया जाए तथा उनकी व्याख्या कैसे की जाय।

5) **उपागमों में सादृश्य (समानता) :** निर्देशन तथा पाठ्यचर्यात्मक दोनों क्षेत्रों में परीक्षणों अथवा परीक्षाओं के द्वारा उपचारी तथा निदानात्मक उपागमों का उपयोग किया जाता रहा है। परंतु विकासात्मक तथा उपचारी पक्षों पर पूर्ण ध्यान नहीं दिया गया है उदाहरणार्थ, जब कोई विद्यार्थी फेल हो जाता है तो बहुत कम अध्यापक इस बात का पता लगाने का प्रयत्न करते हैं कि उसकी असफलता के पीछे कौन से कारण रहे हैं, विशेषकर उस अवस्था में जब इसके कारण स्पष्ट रूप से दृश्य न हों। प्रायः एक-एक पहलू को लेकर निदान नहीं किया जाता। निरोधक (preventive) उपागम की पूर्ण संभाव्यता की भी दोनों क्षेत्रों द्वारा उपेक्षा की गई है। ऐसे कितने अध्यापक होंगे जो यह प्रयत्न करते हों कि विद्यार्थियों की समस्याएँ, जैसे– शैक्षिक असफलता, किसी पाठ्यचर्यात्मक कार्यकलाप में अचानक रुचि कम हो जाना इत्यादि उत्पन्न ही न हों।

2.3.4 विद्यालयी पाठ्यचर्या द्वारा निर्देशन

प्रत्येक विषय का अध्ययन निर्देशन हेतु कुछ विशिष्ट अवसर प्रदान करता है। जैसे, गणित के अध्ययन से सही और तर्कपूर्ण चिंतन (तार्किक सोच) के विकास के अवसर मिलने चाहिए। सामाजिक अध्ययन, इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र द्वारा विद्यार्थियों में वे क्षमताएँ आ जानी चाहिए जिनसे वे आस-पास की निरंतर बदलती दुनिया में अपने-आपको समायोजित कर सकें तथा दुनिया को दिखा दे कि भ्रष्ट करने वाली प्रवृत्तियों का मुकाबला वे किस भांति कर सकते हैं। भाषा का अध्ययन ऐसा होना चाहिए जो विद्यार्थियों के समस्त संप्रेषण कौशलों के विकास तथा उसे अपने-आप को तथा दूसरों को समझने में उसके विकास में स्पष्ट व निश्चित रूप से योगदान दे। शारीरिक शिक्षा मनोरंजन तथा स्वास्थ्य संबंधी क्षेत्रों में निर्देशन संबंधी उत्तर प्रकार के अवसर प्रदान करता है। गृह-अर्थशास्त्र अथवा गृह-विज्ञान के अंतर्गत स्वास्थ्य संबंधी तथा वर्तमान तथा भविष्य के पारिवारिक जीवन संबंधी निर्देशन सम्मिलित हो सकते हैं। इसी प्रकार व्यापार शिक्षा, कला तथा विभिन्न कार्यानुभवपरक विषयों में निहित वैयक्तिक तथा व्यावसायिक मूल्यों को देखा जा सकता है, बशर्ते अध्यापक निर्देशन मनस्क (प्रवण) (guidance minded) हों।

1) **साहित्य :** मूल्य विकास के अवसर साहित्य की कक्षाओं में सर्वाधिक सुस्पष्ट होते हैं। लघु कथाओं, नाटकों, उपन्यासों, निबंधों तथा कविताओं के द्वारा ऐसी स्थितियाँ प्रस्तुत की जा सकती हैं जिनके द्वारा व्यक्ति के प्रयोजन प्रकट हो सकते हैं समस्याओं का समाधान ढूंढा जा सकता है तथा निर्णय लिए जा सकते हैं। साहित्य का अध्यापन करते समय निर्देशन का एक महत्त्वपूर्ण भाग विभिन्न चरित्रों (पात्रों) का अध्ययन है – उनके किए व्यवहार; क्यों किये; उनके कृत्यों के परिणाम क्या हुए; कौन से द्वंद्व हैं जो आज हमारे वास्तविक जीवन में उत्पन्न हो सकते हैं? जीवन की कई वास्तविकताओं के लिए साहित्य की बहुत-सी स्थितियों का उपयोग आज के किशोरों की जटिलताओं पर प्रकाश डालने के लिए किया जा सकता है। इसके आधार पर सुदृढ़ मूल्यों (sound values) के विकास में उनकी सहायता की जा सकती है। निर्देशन-मनस्क अध्यापकों

का मानना है कि साहित्य के अध्यापन में सुदृढ़ मूल्यों का विकास उनका अत्यंत महत्त्वपूर्ण उद्देश्य होता है। साहित्य जीवित रहता है, क्योंकि यह अपने अनुशासन (विषय) तथा कला के माध्यम से जीवन को प्रतिबिंबित करता है। एक दसवीं कक्षा के लड़के ने निम्नलिखित विषय पर निबंध लिखा कि : ''मैं क्या सोचता हूँ कि मैं एक व्यक्ति के रूप में कैसा हूँ?'' दूसरे क्या सोचते हैं कि मैं एक व्यक्ति के रूप में कैसा हूँ? मैं क्या सोचता हूँ कि एक व्यक्ति रूप में मैं कैसा व्यक्ति बनना पसंद करूँगा? यह दर्शाता है कि स्वयं विद्यार्थियों तथा अध्यापकों के लिए इस प्रकार के आत्म विश्लेषी (अंतर्दशी) रिपोर्ट (प्रतिवेदन) कितनी आत्मस्वीकृतिपरक (revealing) हो सकती हैं।

''एक व्यक्ति रूप में जैसा मैं अपने आपको समझता हूँ'' मैं यह सोचना चाहता हूँ कि दो पैरों वाले जीव के रूप में मैं सबसे बड़ी चीज़ हूँ परंतु मुझे खेद इस बात का है कि मैं यह जानता हूँ कि ऐसा नहीं हूँ, मैं तो अन्य विद्यार्थियों की भांति एक विद्यार्थी हूँ जिसकी वही सामान्य-सी समस्याएँ हैं, कार्यकलाप है और लड़कियों के विषय में वही सर्वसामान्य से विचार हैं। हाँ मेरे अंदर विनोदशीलता बोध पर्याप्त रूप में देखा जा सकता है। मेरी एक विकट समस्या यह है कि मैं उच्च कोटि का सुस्त (आलसी) व्यक्ति हूँ परंतु जब मेरे माता-पिता का दबाव होता है तो मैं लगभग अपने समस्त कार्य (जो मुझे करने होते हैं) कर लेता हूँ। लड़के और लड़कियाँ दोनों प्रकार के मेरे काफी मित्र हैं, परंतु अधिकांश लड़के जिनके साथ में घूमता हूँ, मुझ से उम्र में बड़े हैं जिसके कारण मुझे यह अनुभव होता है कि मैं अपनी आयु की तुलना में अधिक परिपक्व हूँ।

''एक व्यक्ति के रूप में जैसा दूसरे मुझे समझते हैं'' मेरे विचार में अधिकांश व्यक्ति मेरे विषय में यह सोचते हैं कि मैं ठीक-ठाक हूँ। मैं दिखावा बहुत अधिक करता हूँ और कई बार पिछड़ जाता हूँ जिससे दूसरों के विचारों में मेरी प्रतिष्ठा गिर जाती है। न तो लोग मुझे एक नेता ही मानते हैं और न एक अनुयायी ही। वे समझते हैं कि मैं लगभग इन दोनों के बीच में आ सकता हूँ। मेरा अंदाजा है कि लोग मुझे एक समझदार लड़का समझते हैं क्योंकि बहुधा वे अपनी जीवन-गाथा तथा अपनी समस्याएँ मुझे बता देते हैं। मैं मित्र शीघ्र ही बना लेता हूँ परंतु मेरे कुछ लोग दुश्मन भी हैं। कुछ व्यक्ति ऐसा भी सोचते हैं कि मैं एक मूर्ख हूँ या एक ऐसा लड़का जिसे जब तक भली-भांति जाना नहीं जाता लोग उसे पसंद नहीं करते हैं।

''एक व्यक्ति के रूप में जैसा मैं बनना चाहूँगा'' मैं चाहता हूँ कि मैं वैसा ही बना रहूं जैसा वास्तव में मैं हूँ। मेरी यह इच्छा है कि मुझे कुछ कम स्वार्थी होना चाहिए था क्योंकि यह मेरी सबसे बड़ी कमी है। दूसरी बात केवल यह है कि मैं परिश्रमी नहीं हूँ। मैं सरल मार्ग को अपनाना चाहता हूँ। यदि मैं इस प्रवृत्ति को बदल पाता या बदल सकता हूँ तो मैं एक बेहतर व्यक्ति बन सकता हूँ। संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि जो कुछ मैं हूँ उसमें मेरे माता-पिता का काफी हाथ है और उस सबके लिए जो उन्होंने मेरे लिए किया है मैं उनका कृतज्ञ हूँ। मैं यह आशा करता हूँ मैं ऐसा व्यक्ति बन जाऊँ जो वे मुझे बनना देखना चाहते हैं।

2) **सामाजिक अध्ययन :** जिस भांति से अधिकांश विद्यालयों में सामाजिक अध्ययन विषय को पढ़ाया जाता है ऐसा प्रतीत होता है कि उसका विद्यार्थियों द्वारा काफी विरोध किया गया है। इस समस्या से निपटने के लिए, अध्यापकों को चाहिए कि वे सर्वप्रथम विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के विषय में उनके नकारात्मक भावों को प्रकट या अभिव्यक्त होने दें। इससे उन्हें यह लगेगा कि अध्यापक उन्हें समझता है, वह उनके दृष्टिकोण की इज्ज़त करता है और इस बात के लिए कि इस पाठ्यक्रम को उनके लिए

किस प्रकार अधिक सार्थक और रुचिकर बनाया जाए, विद्यार्थियों के विचार चाहता है। उसके पश्चात् वह इस बात पर चर्चा कर सकता है कि इस विषय की आवश्यकता क्यों है और अध्यापक ऐसा क्यों सोचता है कि विद्यार्थियों के लिए यह विषय महत्त्वपूर्ण है।

सामाजिक अध्ययन में विद्यार्थी यह सीखता है कि वर्तमान का विकास भूतकाल से कैसे हुआ और किस भांति वर्तमान (तथा भूतकाल) भविष्य को प्रभावित करते हैं या कर सकते हैं। इससे युवाओं को यह बताने की आवश्यकता है कि भूतकाल में हुई ग़लतियों से भविष्य में कैसे बचा जा सकता है।

विज्ञान की भांति इससे विद्यार्थियों को यह सीखना चाहिए कि 'तथ्य' तथा 'मत' में अंतर किस प्रकार करना चाहिए तथा इसी प्रकार पक्षपात रहित रिर्पोटिंग को प्रचार (अधिप्रचार) (propaganda) से कैसे भिन्न माना जाए। दोनों विषयों (विज्ञान तथा सामाजिक अध्ययन) का उद्देश्य होना चाहिए कि वे वर्तमान की अनिश्चितताओं का मुकाबला करने में सहायता करें और साथ-साथ शाश्वत मूल्यों के प्रति वचनबद्धता दर्शाएँ।

3. **गणित :** यह मात्र संयोग रहा है कि विश्व के महान दार्शनिक, महान गणितज्ञ भी रहे हैं, जैसे अरस्तु। गणितीय समस्याओं के हल करने में निहित तर्क तथा अनुशासन से व्यक्ति सरलतापूर्वक विश्व के चमत्कारों के विषय में सोच सकता है जो क्रमबद्ध पूर्वानुमेय तथा तार्किक (logical) प्रतीत होते हैं।

अध्यापक मानव इतिहास में तर्क (logic) और तार्किकता (reasoning) के महत्त्व को दर्शा सकता है, यह बता सकता है कि गणित की भाषा किस भांति जाति तथा वर्ण से ऊपर है, किस भांति इसे कौतुक (fun) के रूप में लिया जा सकता है तथा किस भांति इसके द्वारा समस्याओं तथा पहेलियों से निपटा जा सकता है।

बीजगणित के अध्यापन द्वारा अध्यापक विद्यार्थियों को यह अनुभव कराने में सहायता कर सकता है कि गणित एक 'चिन्हों की भाषा' है जिसे शताब्दियों पहले व्यक्ति अपने अमूर्त तथा प्रायोगिक चिंतन को सुगम बनाने के लिए सीखा। विद्यार्थी इस बात में भी रुचि दर्शाएँगे कि आज बाह्य अंतरिक्ष पर विजय पाने के प्रयत्नों में गणित की भूमिका क्या रही है।

4) **सभी विषयों में निहित वैयक्तिक तथा सामाजिक मूल्य :** कोई भी विषय, चाहे वे कला, संगीत, व्यवसाय अध्ययन, शिक्षा या गृह विज्ञान जैसे शैक्षिक विषय ही क्यों न हो, प्रत्येक का अपना प्रयोजन व लक्ष्य होता है। इसका प्रयोजन व्यक्ति तथा मानव को एक श्रेष्ठ जीवन जीने के लिए सहायता होना चाहिए। विद्यार्थियों को चाहिए कि वे प्रत्येक विषयक को अपने सामाजिक एवं वैयक्तिक विकास से तथा मानव जाति के दीर्घकालीन लक्ष्यों से संबंधित करके देखें।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी :क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

1) एक संगत तथा सार्थक पाठ्यचर्या के तीन मानदंड लिखें।

.....

.....

.....

2) बताइए कि नीचे लिखे कथन सत्य हैं अथवा असत्य।

क) पाठ्यचर्या एक विषय-केंद्रित उपागम से एक विद्यार्थी-केंद्रित उपागम की ओर अग्रसर हुई है।

ख) निर्देशन एवं पाठ्यचर्या के समाकलन की कोई आवश्यकता नहीं है।

ग) विद्यार्थियों की सामान्य आवश्यकताओं को सरलता से पहचाना जा सकता है।

घ) प्रत्येक विद्यालयी विषय के शैक्षिक तथा व्यावसायिक निहितार्थ होते हैं।

3) नीचे दिए गए शब्दों का मेल दूसरे स्तंभ में दिए उनके अर्थों के साथ करें।

शब्द		**उनके अर्थ**
i) पाठ्यचर्या	क)	पुरस्कार
ii) प्रबलन	ख)	मूल्यांकन
iii) विशिष्ट आवश्यकताएँ	ग)	सुनियोजित अधिगम अनुभव
iv) निर्धारण	घ)	विशिष्ट/सामान्य आवश्यकताएँ

4) संक्षेप में व्याख्या कीजिए।

क) निर्देशन दृष्टिकोण से पाठ्यचर्या का अर्थ

.....

.....

.....

ख) 'समग्र व्यक्ति' की आवश्यकताएँ

.....

.....

.....

ग) साहित्य के अध्ययन के द्वारा निर्देशन

.....

.....

.....

.....

5) रिक्त स्थानों को भरें –

क) विद्यार्थी (बच्चे) अपने समस्त ..... से सीखते हैं और मात्र उनसे ही नहीं जो कक्षा में प्राप्त किए जाते हैं।

ख) पाठ्यचर्या का विकास ..... प्रक्रिया के सामंजस्य में करना चाहिए।

ग) गृह विज्ञान ..... तथा ..... में निर्देशन प्रदान कर सकता है।

2.4 निर्देशन तथा अधिगम

एक निर्देशन आधारित पाठ्यचर्या में अधिगम प्रक्रिया की प्रकृति, अध्येता, अधिगम, अवस्थिति, अध्यापक तथा निर्देशन परामर्शदाता (उपबोधक) महत्त्वपूर्ण कारक होते हैं। अध्यापक तथा उपबोधक (counsellors) को यह ज्ञान अवश्य होना चाहिए कि बच्चे और अन्य व्यक्ति किस प्रकार सीखते हैं।

हमारे शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक इतिहास के प्रारंभ में अधिगम प्रक्रिया के संदर्भ में स्मृति स्मरणशक्ति (याददाश्त) को महत्त्वपूर्ण घटक माना जाता था। परंतु अब यह मान लिया गया है कि अधिगम अनुभव के आधार पर व्यवहार में परिवर्तन प्राप्त करने का विषय है न कि मुख्यतः स्मृति द्वारा ज्ञान अर्जन का।

हम कैसे सीखते हैं इस समस्या से संबंधित प्रयोगात्मक अन्वेषण लगभग 100 वर्ष से चलते आ रहे हैं। मनोविज्ञान के विभिन्न संप्रदायों ने प्रयोगों के आधार पर अधिगम सीखने के सिद्धांतों का निर्माण किया है जो इस प्रकार हैं : अनुक्रियाओं के अनुबंधन द्वारा अधिगम, प्रत्यन-त्रुटि अधिगम तथा अंतर्दृष्टि द्वारा अधिगम। नवीन अध्ययनों ने प्रत्यक्षीकरण द्वारा, चिंतन द्वारा, स्वयं करके सीखने को तथा सृजनात्मक अधिगम को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। वास्तविक जीवन स्थितियों में अधिगम सभी प्रमुख सिद्धांतों के कुछ पक्षों को प्रतिबिंबित करता प्रतीत होता है।

2.4.1 अधिगम प्रक्रिया की प्रकृति

अनिवार्य रूप से अधिगम लक्ष्य-निर्देशित होना चाहिए, विशेष रूप से इसलिए कि अध्येता निरंतर अपने व्यवहार में परिवर्तन दर्शाता रहता है। ये परिवर्तन किस प्रकार घटित होते हैं और इनकी दिशा किस ओर होती है; यह प्रश्न निर्देशन कार्यक्रम के लिए एक सीधी चुनौती है।

1) **अधिगम के लक्ष्य :** प्रभावी अधिगम एक संगठित (क्रमबद्ध) प्रक्रिया होती है, जो सरल से जटिल की ओर चलती है। इस प्रकार पहले से ही एक 'दिशा' विन्यास (direction set) विद्यमान रहता है। अतः कक्षा आरंभ करने से पूर्व अध्यापक यह निश्चित करता है कि उसे उस दिन क्या पढ़ाना है। कक्षा के उपरांत वह विद्यार्थियों को बताता है कि इस प्रकरण (विषय) से किस प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं तथा उन पर वह विद्यार्थियों से चर्चा करता है।

2) **अधिगम एक एकीकृत प्रक्रिया है :** चूँकि निर्देशन में वृद्धि और विकास का लक्ष्य निहित होता है अतः निश्चित ही इसके अंतर्गत मन तथा शरीर संबंधी द्वैतवाद की समस्या पर भी विचार करना होगा। शोधों के आधार पर यह स्पष्ट हो चुका है कि जब भी बच्चा कोई अनुक्रिया करता है तो उसके व्यक्तित्व के ये दोनों पक्ष– बौद्धिक व शारीरिक कार्य करते हैं। उदाहरणार्थ, किसी गेंद के फेंकने में तार्किक चिंतन की आवश्यकता पड़ती है तथा साथ ही शारीरिक समन्वय की भी (हाथ और बाजुओं को एक दिशा विशेष में हिलाना)। इसी प्रकार अंकगणित के किसी पहाड़े को ठीक से याद करने के लिए रटंत स्मृति (rote memory) की आवश्यकता होती है (इसे बार-बार दोहराना तथा लिखने और बोलने के लिए विशेष योग्यता का प्रयोग करना)।

3) **अनुभव व अधिगम :** अनुभव गहन रूप से एक व्यक्तिगत मामला है जो हमारी आस्थाओं और अभिवृत्तियों को प्रभावित करता है। प्रत्येक विद्यार्थी कक्षा में अपने अनुभव

लेकर आता है। उन अनुभवों के आधार पर उसे आगे नए अनुभवों को प्राप्त करना होता है। यह इन अनुभवों का योग है जो अधिगम प्रारूपों का निर्माण करता है। अतः यदि एक अध्यापक बच्चों की यथा स्थिति (अर्थात् जैसे भी वे हैं) को स्वीकार कर उसी के अनुसार बच्चे के साथ चले तो यह सर्वोत्तम निर्देशन परंपरा का निवर्हन होगा।

4) **अधिगम के मनोवैज्ञानिक आधार :** यद्यपि यह बात अभी तक पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं हो पाई है कि अधिगम प्रक्रिया में मानव तंत्रिका तंत्र किस भांति कार्य करता है, तथापि इसके लिए पर्याप्त साक्ष्य प्रतीत होते हैं कि मानव मस्तिष्क ही अधिगम का स्थान है। वास्तव में बहुत-सी अधिगम अपंगताएँ– जैसे कि पठनवैकल्य (dyslexia), अपेक्षाकृत कम उपलब्धि (under achievement), खराब (निम्न) उपलब्धि (poor achievement), मंदग्राहिता (slow learning) इत्यादि मस्तिष्क के किसी प्रकार के विकासात्मक भिन्नता के कारण हो सकती है।

5) **अधिगम में संवेग :** तनावयुक्त अवधियों, सुख, प्रसन्नता अधिगम में बाधा उत्पन्न/प्रबलित करते हैं। अध्यापक अपने व्यक्तित्व से कक्षा में संवेगात्मक वातावरण का निर्माण करता है। प्रभावी अधिगम सुसंमजित अध्यापकों तथा विद्यार्थियों पर निर्भर करता है।

6) **अधिगम तथा आत्मधारणा (self concept) :** चूँकि अधिकांश रूप में व्यवहार उन लक्ष्यों की ओर निर्देशित होता है जो व्यक्ति को उसकी आवश्यकताओं की संतुष्टि के संदर्भ में महत्त्वपूर्ण लगते हों। व्यक्ति जिस भांति अपने लक्ष्यों की व्याख्या करता है तथा उनकी प्राप्ति के लिए जिन विधियों को स्वीकार करता है, वे अधिगम प्रक्रिया के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं। उदाहरणार्थ, सोलह वर्ष की आयु में विपुल अपने जीवन में एक अपनी ऑटोमोबाइल (कार, गाड़ी आदि) को प्राप्त करना सर्वाधिक महत्त्व की चीज मानता है। इस तरह की किसी गाड़ी को प्राप्त करने के लिए वह कुछ भी करने को तैयार है, चाहे उसे उसके निर्माण के लिए अलग-अलग भाग (पूर्जे) चुराने ही क्यों न पड़ें। अपनी आवश्यकताओं की व्याख्या तथा उनकी संतुष्टि कैसे की जाए यह बात उसके अधिकांश अधिगम को प्रभावित कर देगी। रॉजर्स के अनुसार, विद्यार्थी के आंतरिक निर्देश-आधार (internal frame of reference) या संदर्भ विन्यास अर्थात् उसकी आत्मधारणा को उसकी अधिगम प्रक्रिया में सहायता प्रदान करने के लिए समझना चाहिए, चाहे यह सामूहिक शिक्षण (अनुदेशन) का मामला हो अथवा व्यक्तिगत उपबोधन (counselling) का।

2.4.2 अधिगम सामग्री तथा अध्यापक का महत्व

अधिगम मात्र अध्येता के प्रयासों पर ही निर्भर नहीं करता अपितु जो कुछ वह सीखता है उसके संगठित प्रस्तुतीकरण पर भी निर्भर करता है। दूसरे शब्दों में, अधिगम प्रक्रिया में अध्यापक की एक सार्थक भूमिका होती है।

विगत में निर्देशन कार्यक्रमों में अध्यापक की भूमिका को नज़रअंदाज किया जाता रहा है। तथापि अब यह स्पष्ट हो गया है कि विद्यालय में मात्र निर्देशन-विशेषज्ञ ही निर्देशन कार्यक्रमों का संचालन नहीं कर सकते। यह अध्यापक ही है जो विषयवस्तु की व्यवस्था करता है, अधिगम पथ को निदेशित करता है और उन लक्ष्यों की व्याख्या करता है जो उसके लिए निर्धारित किए गए हैं।

1) **संगठित प्रविधियों की आवश्यकता :** यदि अपेक्षित अधिगम को सुनिश्चित करना है तो कक्षा प्रविधियों की 'क्रमबद्ध' व्यवस्था करना आवश्यक है। अतः कक्षा– जिसमें प्रारंभिक विद्यार्थी हैं, अध्यापक को उस प्रकार के अनुभवों का चयन करना होगा जो विद्यार्थी को शिक्षा देने के लिए अभिकल्पित तैयार किए गए हैं। उदाहरण के लिए, यह निश्चय करने के पश्चात् कि कौन-सा प्रकरण पढ़ाना है, अध्यापक पहले उस समस्त अध्याय (इकाई) को सारांश रूप में प्रस्तुत करेगा और तब उस पाठ की प्रस्तावना आरंभ करेगा।

2) **अधिगम तथा प्रभावी कार्य करने संबंधी आदत :** विद्यार्थी के कक्षा से बाहर जाने के पश्चात् क्या होता है? अर्थात् कक्षा से बाहर भी विद्यार्थी की अधिगम संबंधी वास्तविक आवश्यकताएँ रहती हैं, जिन्हें प्रभावी कार्य संबंधी आदतों की स्थापना कहा जा सकता है।

हमारा लक्ष्य एक सुसमायोजित व्यक्ति का निर्माण है। परंतु विद्यार्थियों को यह सिखाने की आवश्यकता भी है कि अधिगम मात्र एक खेल नहीं है। इसके लिए एकाग्र प्रयासों व परिश्रम के द्वारा विषयवस्तु में प्रवीणता, अभिरुचि तथा घर पर पढ़ने के एक निश्चित कार्यक्रम की आवश्यकता होती है। समस्या यह है कि अधिगम में रुचि तथा अनुशासन में संतुलन कैसे रखा जाए। इस प्रकरण पर हम आगे चर्चा करेंगे।

3) **कक्षा में अनुशासन के लिए सुझाव :** कक्षा में अनुशासन बनाए रखने की प्रभावी मूल्यांकन विधि स्वयं विद्यार्थियों द्वारा ही प्राप्त होती है।

वाल्टर महोदय ने कक्षा में अनुशासन बनाए रखने के लिए कुछ सुझाव दिए हैं जो निम्नलिखित हैं :

i) सारे दिन के कार्य को पहले से ही नियोजित कर लें।

ii) सुनिश्चित करें कि विद्यार्थी प्रदत्त कार्य (assignments) को जानते हैं।

iii) लिखित कार्य की एक समय सीमा निर्धारित करें।

iv) विद्यार्थियों के साथ अपने व्यवहार में निश्चित व दृढ़ रहें : 'मेरा आशय कार्य से है' यह कथन व्यवहार में दृढ़ता को दर्शाता है।

v) अपनी कक्षा में विद्यार्थियों से पहले आएं।

vi) अपनी कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी में अभिरुचि विकसित करें।

vii) सुनिश्चित करें कि विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत लिखित कार्य को ग्रेड देने (जाँचने) के बाद उन्हें वापस कर दिया जाए।

viii) इस बात के लिए सुनिश्चित रहें कि आप कुछ विद्यार्थियों के साथ पक्षपात तो नहीं कर रहे। पक्षपात करने से कक्षा के विद्यार्थियों का मनोबल गिर जाता है।

ix) अपनी कक्षा को नियंत्रित करने की योजना बनाएँ। केवल अंतिम विकल्प के रूप में ही दोषी विद्यार्थियों को उप-प्रधानाचार्य अथवा प्रधानाचार्य के पास भेंजे।

x) बहुत तीखी टीका-टिप्पणी (कठोर) न करें। सुनिश्चित करें कि जो टिप्पणी आपने की है उसका आप बचाव (defend) कर सकते हैं।

2.4.3 अध्येता का महत्व

एक मूलभूत समस्या, जिसका सामना शिक्षक को करना होता है, वह उन विद्यार्थियों के निर्देशन में आती है जो किसी न किसी कारण से स्वीकार्य मापदंडों से भिन्न रूप में व्यवहार करते हैं। अतः अध्यापक को सदैव यह ध्यान में रखना चाहिए कि विद्यार्थियों की अनुक्रियाएँ अपने आप में प्रत्येक विद्यार्थी के लिए अपने ढंग की होती है – कभी की भी अनुक्रिया एक ही प्रकार की नहीं होती।

एक सफल अध्यापक को अपने कौशलों तथा अपनी समझ का उपयोग करते हुए एक ऐसी व्यापक प्रविधि अपनानी होगी जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों की भिन्न-भिन्न आवश्यकताओं का समावेश हो जाए। एक विशेष आवश्यकता वाला विद्यार्थी अन्य कक्षा के विद्यार्थियों की तुलना में भिन्न प्रतीत हो जबकि उसकी मूल अभिवृत्तियाँ (रवैया) वही हो सकती हैं। दूसरी ओर, ऊपरी रूप से दो सामान्य दिखने वाले विद्यार्थियों में जीवन के प्रति दृष्टिकोण में अत्यधिक अंतर हो सकता है। जब अध्यापक यह अनुभव कर लेता है कि किसी अवस्था विशेष में विशिष्ट सहायता की आवश्यकता है तो ऐसे विद्यार्थियों को वह एक वृत्तिक उपबोधक (परामर्शदाता) (career counsellor) के पास भेज सकता है।

बच्चे प्रायः अपने बारे में, अपने घरों के बारे में, अपने मित्रों और अभिरुचियों के बारे में आपस में बातचीत करना पसंद करते हैं। इनमें से बहुत-से विद्यार्थी अध्यापक को अपने माता-पिता के समान मानते हैं जिन्हें वे अपने लिए, विश्वसनीय समझते हैं। बच्चों के साथ सामान्य बातचीत के दौरान भी अध्यापक बच्चों के विषय में या उनकी अभिवृत्तियों के विषय में काफी कुछ जान सकते हैं।

अध्यापकों तथा उपबोधकों (counsellor) के लिए निर्देश

1) **प्रत्येक विद्यार्थी से उच्चतम अपेक्षा रखें :** अधिकांश विद्यार्थी उससे कहीं अधिक कर सकते हैं जितनी अपेक्षा प्रौढ़ों (वयस्कों) को उनसे होती है। अध्यापक को विद्यार्थियों के लिए वह सब नहीं करना चाहिए जो वे (विद्यार्थी) अपने लिए स्वयं करने में सक्षम हैं। उदाहरण के लिए, यदि अध्यापक ने किसी अभ्यास प्रश्नावली के प्रश्नों को हल करने के लिए उदाहरण सहित सूत्र पढ़ा दिया है तो उसे उस प्रश्नावली को श्यामपट्ट पर हल नहीं करना चाहिए।

2) **प्रत्येक विद्यार्थी को प्रोत्साहित करें :** प्रोत्साहन से आशय पुरस्कार अथवा प्रशंसा से नहीं है। पुरस्कार और प्रशंसा की यह अति होगी यदि अध्यापक उन सभी अभ्यास कार्यों पर जिनमें सभी प्रश्न ठीक से हल किए हों, ''अच्छा'', ''बहुत अच्छा'' लिखता चला जाए। इस प्रकार की प्रशंसा करने से ''प्रशंसा'' शब्द मूल्यहीन हो जाएगा। दूसरी ओर यदि अध्यापक कुछ चुने हुए अभ्यास कार्यों पर ''अच्छा'' शब्द का प्रयोग करें तथा साथ अपनी टिप्पणी प्रस्तुत करे कि इसमें क्या ''अच्छाई'' निहित है (जैसे बहुत व्यवस्थित ढंग से कार्य किया गया है या बड़ा साफ सुथरा कार्य है), तो ऐसी प्रशंसा अधिक प्रोत्साहित करने वाली होगी।

3) **सुने अधिक :** बहुत से अध्यापक स्वयं बहुत अधिक बोलते रहते हैं। यही कारण है कि कुछ विद्यार्थी अध्यापक को सुनते ही नहीं अर्थात् अध्यापक – बधिर (उदासीन) (teacher deaf) हो जाते हैं। विद्यार्थी यह भली-भांति जानते हें कि अमुक अध्यापक कितना समय चीज़ों को समझाने व उनकी लम्बी-लम्बी व्याख्या में नष्ट करते हैं। कितना समय वे डांटने में नष्ट कर देते हैं। एक बच्चे ने कहा ''हमारी हिंदी की अध्यापिका हमें इतनी बार डांटती रहती हैं कि पढ़ाने के लिए उसके पास समय ही नहीं बचता''।

4) **इस बात को समझने का प्रयत्न कीजिए कि बच्चा अपने व्यवहार को किस रूप में लेता है या समझता है :** बच्चा अपने व्यवहार से क्या प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहा है? वह (व्यवहार) उसे कितना परितोष या संतुष्टि प्रदान कर रहा है? कई बार कोई विद्यार्थी समूह में अपना स्थान बनाने के लिए मूर्खों जैसी टिप्पणी कर सकता है, अध्यापक की आज्ञा का उल्लंघन कर सकता है या बातें करना बंद नहीं करता। इस प्रकार का उसका व्यवहार ध्यान को आकर्षित करने, अपनी पहचान कराने, यह अनुभव कराने कि समूह में उसकी एक भूमिका है, चाहे वह नकारात्मक ही क्यों न हो अथवा उससे किसी को भी सहायता न मिलती हो, का एक तरीका है।

5) **निम्नलिखित तीन बातों का बोध प्राप्त करने का प्रयत्न करें :**

1) **बच्चे को समझना :** उसकी अभिक्षमता, उसके मूल्य, लक्ष्य, उसका व्यक्तित्व, पूर्व ज्ञान, सामान्य अनुभव तथा शारीरिक अवस्था।

2) **कार्य को समझना :** कितना रुचिकर है, कितना कठिन है और इसकी उपयोगिता कितनी है?

3) **अवस्थिति :** बच्चे की अपने सहपाठियों के साथ अंतःक्रिया (बातचीत) तथा उसका अध्यापक के साथ संबंध; समूह की अभिवृत्तियाँ और मनोबल, अभिप्रेरणा, चिंता तथा स्थिति में निहित दबाव, निकटस्थ कार्य परिवेश – प्रकाश व्यवस्था, वायु का आवागमन (ventilation) या वायु संचार, अन्यमनस्कता।

2.4.4 कक्षा अधिगम तथा निर्देशन में निहित मनोवैज्ञानिक कारक

विद्यार्थियों के विषय में जानना तथा उनकी इस प्रकार सहायता करना कि वे स्वयं सीख सकें, निर्देशन का आधार है। कुछ ऐसे सिद्धांत ढूंढें गए हैं जो वास्तविक कक्षा की स्थिति में अधिगम को सुगमता से प्रदान करने में सहायक सिद्ध हुए हैं।

1) **अभिप्रेरणा (Motivation) :** अधिगम उस अवस्था में प्रभावी रूप से घटित होता है और इसके स्थाई रहने की अधिक संभावना होती है जब अध्येता को यह अनुभूति करा दी जाए कि वह कार्यकलाप का एक घटक है। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जो इंजीनियर बनना चाहता है, उस समस्त ज्ञान को प्राप्त करने का भरसक प्रयत्न करेगा जो उसकी आकांक्षा की पूर्ति से जुड़ा हो। अभिप्रेरणा से व्यक्ति स्वतः प्रोत्साहित रहता है, बशर्ते उस क्षेत्र विशेष में व्यक्ति कुछ अभिक्षमता रखता हो।

2) **परिपक्वता के स्तरानुसार समायोजन :** जब कोई व्यक्ति कोई नया कौशल सीख रहा हो, जैसे किसी बेसबाल को फेंकना अथवा किसी शास्त्रीय (क्लासिक) नृत्य का नया सोपान, तो उस कार्य के लिए उसका पर्याप्त रूप में परिपक्व होना अनिवार्य है। यह आवश्यक है कि विद्यार्थी को स्वयं अपनी योग्यताओं तथा सीमाओं का बोध हो। इस सिद्धांत में दो अवधारणाएँ निहित हैं : (1) अध्यापक को चाहिए कि वह विद्यार्थी पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ न डाले (अति एकाग्रता) (over concentration), (2) अधिगम उस अवस्था में सर्वाधिक प्रभावी होगा जबकि विद्यार्थी द्वारा किए जाने वाले कार्यकलापों के संपादन में कार्य तथा विश्राम का सम्यक् वितरण हो (कार्य करने की अवधि बहुत लंबी न हो)।

अतिएकाग्रता तथा कार्य करने की लंबी अवधि दोनों ही अधिगम (सीखने की प्रक्रिया) को हानि पहुँचाती हैं।

3) **अभिरचना (pattern) अधिगम :** किसी उद्देश्य की अभिरचना जितनी अधिक स्पष्ट रूप से समझी जाएगी, अधिगम उतना ही अधिक स्थाई बन सकता है। जो विद्यार्थी एक दिन वकील बनने की आशा रखता है वह अपने सभी विषयों की सार्थकता को इसी नज़रिये से देखने का प्रयत्न करेगा। उदाहरणार्थ, वाद-विवाद तथा नागरिक शास्त्र जैसे विषयों में उसकी रुचि अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक होगी। इसी प्रकार भाषा में काल तथा विराम चिन्हों का कोई अर्थ नहीं होगा जब तक कि इनके उपयोग की सार्थकता दैनिक जीवन में बोली जाने वाली भाषा में भली-भांति समझ नहीं ली जाती।

4) **प्रगति मूल्यांकन** : विद्यार्थियों को विद्यालयी कार्यकलापों में सफलता (या उसके अभाव या असफलता) की चिंता बनी रहती है। अतः अधिगम उस अवस्था में अधिक प्रभावी होगा जबकि अध्येताओं की प्रगति का मूल्य-निर्धारण किया जाता रहे। एक अध्येता को यह जानने की आवश्यकता रहती है कि क्या उसे अपने कार्य को जारी रखना चाहिए या गति को विराम देकर कार्य को पुनरीक्षण किया जाए। मूल्यांकन निर्देशन का सकारात्मक रूप हो सकता है तथा ऐसा होना भी चाहिए। ऐसे बहुत कम विद्यार्थी होंगे जो अपनी सफलता अथवा असफलता के प्रति अनुक्रिया नहीं करते हैं।

5) **व्यापक समाकलित (संघटित) विकास :** शिक्षा के प्रत्येक पक्ष का संबंध अध्येता के विकास से होता है। विद्यालय कार्य में निपुणता या प्रवीणता प्राप्त कर लेने मात्र से भविष्य के नागरिकों का व्यक्तित्व परिपक्व नहीं बन सकता।

वे विद्यार्थी जो कौशल और योग्यताओं को प्राप्त कर पाते हैं उनमें आत्मविश्वास आ जाता है तथा वे सामाजिक दायित्वों का निवर्हन कर पाते हैं। उनमें दृढ़ता व निर्भयतापूर्ण ढंग से कठिनाइयों का सामना करने की क्षमता का विकास हो जाता है। यह मालूम होना चाहिए कि बच्चों के निर्माणात्मक वर्षों में उनके व्यक्तित्व का समाकलित विकास विद्यार्थियों को अधिक परिपक्व व्यक्तित्व में रूपांतरित करने में काफी सहायक होगा।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी : क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

6) निम्नलिखित कथनों को ''सत्य'' और ''असत्य'' दो श्रेणियों में वर्गीकृत कीजिए।

क) प्रभावी अधिगम एक क्रमबद्ध प्रक्रिया है जो जटिल से सरल की ओर चलती है।

ख) अधिगम अध्येता के प्रयासों के अतिरिक्त अधिगम सामग्री तथा अध्यापक पर निर्भर करता है।

ग) जब कोई विद्यार्थी किसी नए कौशल को सीखता है तो यह आवश्यक है कि वह उस कार्य को करने या सीखने के लिए पर्याप्त रूप में परिपक्व हो।

7) सबसे उपयुक्त उत्तर को चुनिए।

अधिगम में दोनों निहित हैं –

i) अभिप्रेरक तथा संवेग

ii) स्व तथा अन्य व्यक्ति

iii) मन तथा शरीर

8) कला अधिगम में सम्मिलित मनोवैज्ञानिक कारकों का वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 निर्देशन तथा अनुशासन

यह बात सुस्पष्ट है कि कक्षा-अनुशासन के बिना अध्यापक अपने कार्य में सफल नहीं हो सकते हैं तथा विरोधाभास रूप में अनुशासन एक ऐसा मामला है जिसका अनुभव हमें उस समय अधिक होता है जब इसका अभाव हो, न कि जब यह विद्यमान हो। हमें विदित है कि बिना अनुशासन के अध्यापन एक थकान पैदा करने वाला, हताशपूर्ण, निराशाजनक तथा असंभव सा कार्य लगता है। परंतु वह पकड़ में न आने वाला (elusive) कौन-सा गुण है जिसे कुछ (भाग्यशाली) अध्यापक लगभग पहले से मान कर चलते हैं।

आइए, जरा देखें कि कुछ अध्यापक अनुशासन को किस भांति परिभाषित करते हैं : 1) यह आत्मनियंत्रण तथा क्रमबद्ध आचरण विकसित करने का प्रशिक्षण है; 2) यह सत्ता की स्वीकृति या उसकी अधीनता या नियंत्रण स्वीकार करना है; 3) यह एक ऐसा व्यवहार है जो सुधारात्मक है या दण्डात्मक है।

परंतु अनुशासन की उपर्युक्त परिभाषाओं में कुछ लुप्त है। जो लुप्त है वह है, अनुशासन का शैक्षिक तथा निर्देशन घटक। इस दृष्टि से कि अनुशासन कक्षा स्थिति में प्रभावी हो सके इसके लिए इसका शिक्षा तथा निर्देशन से जुड़ना अनिवार्य है।

अनुशासन स्वयं में कोई ध्येय या साध्य नहीं है, यह तो विद्यार्थियों को समझाने का साधन है कि जो वे सीखना चाहते हैं उसका उनके व्यवहार से संबंध होता है। अतः हम नहीं चाहेंगे कि हमारे विद्यार्थी सत्ता की अधीनता मात्र डर से स्वीकार करते रहें। हम चाहते हैं कि उनका व्यवहार नियमों और सिद्धांतों, आदर्शों तथा दूसरों के प्रति सद्भावना पर आधारित हो।

2.5.1 कक्षा अनुशासन तथा निर्देशन विधियाँ

प्रभावी अध्यापक यह जानते हैं कि प्रतिबंध लगाने की तुलना में कक्षा अनुशासन शिक्षा के लिए अधिक मूलभूत साधन होता है। यह लोकतांत्रिक या स्वेच्छाचारी हो सकता है। अनुशासन बनाए रखने का उत्तरदायित्व समस्त शिक्षकगण को लेना चाहिए।

विद्यार्थी के हित में सर्वोत्तम क्या हो सकता है, इस मामले में कक्षा अध्यापक विशेष रूप से चिन्तित होता है। इसका अर्थ है कि कक्षा अध्यापक को यह निश्चय करने में निर्णायक भूमिका निभानी पड़ेगी कि उसके विद्यार्थियों के लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा। अच्छे अधिगम के अनुकूल वातावरण बनाए रखने के लिए उसे चाहिए कि विद्यालय के नियम लागू करे और उन विद्यार्थियों के कार्यकलापों को प्रतिबंधित करें जो उन्हें अनुशासन में नहीं रख सकते।

कार्य करने के लिए सबसे अच्छा वातावरण उस अवस्था में विद्यमान रहता है जब कक्षा अध्यापक अपने विद्यार्थियों को विद्यालय के नियम-अधिनियमों से अवगत कराता रहे, तथा यह स्पष्ट करता है कि इन नियमों का क्या औचित्य है, अर्थात् इन्हें क्यों बनाया गया है। इसके साथ ही यह समझने में उनकी सहायता करता है कि इन नियमों आदि को लागू करने में वे अपना वैयक्तिक दायित्व कैसे अनुभव करें।

अनुशासन संबंधी समस्याओं के निर्वाह में निर्देशन विधियाँ

अनुशासन संबंधी समस्याओं के निर्वाह में निर्देशन विधियों का प्रयोग काफी प्रभावी हो सकता है। संभवतः अनुशासन के क्षेत्र में निर्देशन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण योगदान **'बाल अध्ययन तकनीकों'** का प्रयोग है। वे सभी व्यक्ति, जो अनुशासन संबंधी समस्याओं से सरोकार रखते हैं, उन्हें बच्चे की आवश्यकताओं तथा रुचियों, उसकी घर की पृष्ठभूमि और उसके विद्यालय संबंधी निष्पादन के विभिन्न पक्षों से अवगत होना चाहिए। इन सबका ब्यौरा **संचयी अभिलेखों** से और **केस कांफ्रेंस'** से प्राप्त किया जा सकता है। उन सभी कारकों की जानकारी जिन्होंने बच्चे के व्यक्तित्व को एक रूप प्रदान किया है अर्थात्, जीवन के प्रति उसकी अभिवृत्तियों का निर्माण किया है, अध्यापक के कार्य को आसान और फलदायक बना सकता है।

अनुशासन संबंधी समस्याओं के निर्वाह के लिए निर्देशिका

चूँकि अध्यापक/उपबोधक को इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर देना होता है अतः वह स्वयं तथा बच्चे से पर्याप्त रूप में अवगत हो जाता है और बच्चे के अनापेक्षित और अस्वीकार्य (inacceptable) व्यवहार के कारणों का पता लगा सकता है।

1) पिछली बार जब बच्चे ने मेरी उपस्थिति में दुर्व्यवहार किया था तो उसने क्या किया था?

2) उस घटनाओं से जिसमें अनुशासन संबंधी समस्या उत्पन्न होती हैं, मेरा उस बालक के विषय में क्या विचार है?

3) पिछली बार जब बच्चे ने मेरी उपस्थिति में दुर्व्यवहार किया तो मैंने उसके साथ कैसे व्यवहार किया था?

4) क्या मेरे पास उसके सामान्य स्वास्थ्य, उसके भोजन तथा उसकी रहन-सहन संबंधी अवस्थाओं के बारे में कोई जानकारी है?

5) क्या मुझे किसी ऐसे कारण की जानकारी है जो उसे तंग कर रहा है?

6) उसके परिवार के सदस्य परस्पर एक-दूसरे के प्रति कैसा अनुभव करते हैं?

7) एक समूह के रूप में एक परिवार के जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण क्या हो सकती/सकता है?

8) बच्चा घर पर कैसे अनुशासित रहता है? घर में लगे प्रतिबंधों के विषय में वह कैसे अनुभव करता है तथा इन प्रतिबंधों को लागू करने की विधियों के विषय में उसके क्या विचार हैं?

9) क्या बच्चे को पता था कि मेरी उससे तथा उसके समकक्ष बच्चों से क्या अपेक्षाएं थीं?

10) अपने सहपाठियों के मध्य बच्चा अपने आपको कैसा 'आंकता' है? उसके मित्र कौन हैं?

11) मेरी कक्षा में कार्यात्मक (working) अवस्थाएँ कैसी हैं?

12) बच्चे के विद्यालयी कार्य का स्तर क्या है?

जीवन में बहुत पहले प्रारंभिक अवस्था में बच्चा सीख लेता है कि कुछ व्यवहार ऐसा होता है जिसे उसके माता-पिता भी सहन नहीं करते। उसके व्यवहार पर कुछ सीमाएँ लगी होती हैं? परंतु माता-पिता तथा अध्यापक कई बार यह भूल जाते हैं कि उन सीमाओं को कैसे लागू किया जाए। इस बात का बच्चे के जीवन पर प्रभाव पड़ता है। विशेषकर अध्यापकों को यह याद रखने की आवश्यकता है कि इससे पूर्व बच्चा उन सीमाओं को समझे, उसे इन सीमाओं को समझना चाहिए।

इन सीमाओं को सारी कक्षा के हित के लिए विद्यार्थी विशेष पर लागू करने में अध्यापक को यह जान लेना चाहिए कि मात्र बच्चे को दबाने से ही उस समस्या का समाधान नहीं हो जाता है जो अनापेक्षित व्यवहार से संबंधित है। वह बालक जिसे व्यवहार की दृष्टि से आज अध्यापक एक समस्या के रूप में देख रहा है उसे इस स्थिति तक पहुँचने में वास्तव में वर्षों लगे हैं। कई बार उसके वैयक्तिक इतिहास में उसके अनापेक्षित व्यवहार के लिए स्पष्ट कारण भी दिखाई देंगे। निम्नलिखित उदाहरण का अवलोकर करें :

शालिनी का उदाहरण

शालिनी की कक्षा अध्यापिका, श्रीमती जैन, शालिनी के विषय में इतनी चिंतित थी कि उसने शालिनी के बारे में समझने के लिए विद्यालय उपबोधक से सहायता मांगी। शालिनी कक्षा VII की छात्रा थी तथा उपस्थितियाँ कम होने के कारण उसके मामले की रिपोर्ट प्रधानाचार्य को की जानी थी। दोनों के द्वारा तथ्यों के ध्यान से किए सर्वेक्षण से पता चला कि शालिनी का अनुपस्थित रहना कक्षा VI के अंतिम सत्र में आरंभ हुआ जब वह अंकगणित के प्रश्नों को हल करने में कठिनाई का अनुभव करने लगी थी। देखा गया कि उसने अधिकांश छुट्टियाँ उन दिनों में ली जिन दिनों उसके अंकगणित की कक्षाएं होती थीं।

उपबोधन स्तरों की कुछ श्रृंखलाओं के पश्चात् उपबोधक ने अंकगणित में उसके लिए उपचारी कक्षाओं की योजना बनाई। मात्र 15 दिन की उपचारी कक्षाओं के पश्चात् ही, शालिनी के कार्य का स्तर सुधरता चला गया और उसने नियमित उपस्थितियों से संबंधित विद्यालय के अधिनियम को स्वीकार कर लिया, अर्थात् वह नियमित रूप से उपस्थित रहने लगी।

2.5.2 व्यवहार तथा अनुचित व्यवहार (दुर्व्यवहार)

चूँकि अध्यापक तथा निर्देशन कर्मियों का प्रशिक्षण तथा उनके दायित्व भिन्न-भिन्न होते हैं अतः वे बच्चे के व्यवहार को अलग-अलग नज़रिए से देखते हैं। अध्यापकों का सरोकार विद्यालय के नियमों तथा नैतिक मापदंडों के उल्लंघन से अधिक होता है। अध्यापकों का विश्वास है कि इस प्रकार नियमों का उल्लंघन विद्यार्थियों की वैयक्तिक समस्याओं से अधिक चिंताजनक होता है।

जबकि निर्देशन कर्मी तथा उपबोधक अध्यापकों की तुलना में बच्चे के आक्रामक व्यवहार को अधिक गंभीरता से लेते हैं। परंतु, दोनों ऐसे व्यवहारों से चिन्तित होते हैं, जैसे असामाजिकता, निर्दयता, चोरी करना तथा भय आदि।

बच्चे अनुचित व्यवहार क्यों करते हैं?

कक्षा के अंदर या कक्षा के बाहर बच्चे के अनुचित व्यवहार करने का कारण ऐसी स्थिति या ऐसा व्यक्ति होता है जो उसके नियंत्रण में नहीं होता/होती। निम्नलिखित बातें कक्षा में अनुचित व्यवहार का संभावित कारण बन सकती हैं :

1) **अनभिज्ञता :** नियमों की अनभिज्ञता अर्थात् उनकी जानकारी न होना, निश्चित रूप से वह कारण है जिससे बच्चा असामान्य व्यवहार करने लगता है। यदि विद्यार्थियों के सम्मुख नियमों की स्पष्ट रूप से संगठित नियमावली भी हो तो भी कई बार उसे यह पता नहीं चलता कि इनमें से कौन-से नियम लागू हो रहे हैं और कौन-से मात्र कागजों पर हैं। अतः उसके पास इस समस्या को हल करने का एक व्यावहारिक तरीका होता है। वह यह देखने के लिए *परीक्षण करने* लगता है, अध्यापक किस नियम को *ठीक समझते* हैं और *किस को नहीं*।

2) **परस्पर विरोधी नियम :** ऐसी अवस्था में जब कुछ व्यवहार जो घर पर (माता-पिता के साथ) प्रशंसनीय होते हैं परंतु विद्यालय में उन्हें अनुचित या अनैतिक माना जाता है, तो ऐसी अवस्था में विद्यार्थी एक द्वंद्व की स्थिति अनुभव करता है। उदाहरणार्थ, पड़ोस के बच्चे ने उसे मारा और उसने बदले में उस बच्चे को पीट डाला। जब वह बहते खून के साथ घर पहुँचा तो माता-पिता ने उसकी चोटों पर दवा लगा दी और कोई नकारात्मक शब्द नहीं कहा। विद्यार्थी ने वैसा ही व्यवहार विद्यालय में किया तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि अध्यापक ने उसे दंड दिया।

   स्पष्ट है कि बहुत से विद्यार्थी अनुशासन भंग करते हैं, मात्र इसलिए कि उनकी यह बात समझ में नहीं आती कि घर के नियमों तथा विद्यालय के नियमों में भेद कैसे किया जाए।

3) **कुंठा :** कक्षा में अनुशासन अनुपालन संबंधी समस्याओं से प्रायः यह लगता है कि जब विद्यार्थियों को असफलता का सामना करना पड़ता है तो उनकी कुंठा अत्यधिक बढ़ जाती है। कक्षा में कुंठा के कम से कम तीन स्रोत देखे गए हैं जिनसे कोई भी विद्यार्थी प्रभावित हो जाता है।

   क) अध्यापक

   ख) उसके सहपाठी

   ग) क्रियाकलाप

अहमद का उदाहरण

अहमद अपने विद्यालय का प्रतिभाशाली छात्र था। आरंभ से ही वह अपनी उत्कृष्ट शैक्षिक उपलब्धियों के कारण विशेष योग्यता प्रमाणपत्र (distinction) तथा छात्रवृत्ति लेता आ रहा था। अब वह नवीं कक्षा में था और कक्षा अध्यापक के लिए एक समस्या बन चुका था। उसके सहपाठियों की यह शिकायत थी कि वह खाली पीरियडों (कालांशों) में उन्हें पढ़ने नहीं देता, अपने साथ खेलने के लिए उन्हें मारता है और कमज़ोर विद्यार्थियों की खिल्ली उड़ाता है।

उसकी कक्षा अध्यापिका, श्रीमती अग्रवाल ने उसकी पूर्व कक्षा अध्यापिका (VIII की कक्षा अध्यापिका) से बातचीत करने से पहले कुछ दिन प्रतीक्षा की। इस अवधि में उसने देखा कि अहमद ने पहली साप्ताहिक परीक्षा में सभी विषयों में 80 प्रतिशत अंकों से अधिक अंक प्राप्त किए थे।

श्री सिंह (जो अहमद के पूर्व कक्षा अध्यापक थे) से तथा कुछ अन्य विद्यार्थियों से, जो अहमद के साथ प्राथमिक विद्यालय से पढ़ते आए थे, बातचीत करने के पश्चात्, श्रीमती अग्रवाल ने पाया कि यह समस्या उस समय आरंभ हुई जब वह कक्षा छह में पढ़ता

था। उस समय श्री सिंह उसके कक्षा अध्यापक पहली बार बने थे (तथा कक्षा VII और कक्षा VIII में भी कक्षा अध्यापक रहे)।

श्री सिंह को सभी विद्यार्थी पसंद करते थे तथा उनके सहयोगी भी उनका आदर करते थे। कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने के कारण अहमद श्री सिंह का चहेता विद्यार्थी बन गया।

एक बार अहमद ने अंग्रेज़ी विषय में 40 अंकों में से 39.5 अंक प्राप्त किए (इस विषय अंग्रेजी को श्री सिंह पढ़ाते थे)। अहमद ने श्री सिंह से अनुरोध किया कि उसके प्रगति अभिलेख में वह 39.5 को 40/40 लिख दें। अध्यापक ने जैसा अहमद ने अनुरोध किया, वह परिवर्तन उसके अंकों में कर दिया। यही घटना अगली परीक्षाओं में दोहरा दी गई, परंतु अब की बार श्री सिंह ने यह 1/2 अंक स्वयं ही बढ़ा दिए और उसके अंकों को 40/40 कर दिया। ऐसी ही घटनाएँ दो अन्य विषयों में हुई जो अन्य दो अध्यापकों द्वारा पढ़ाए गए थे। प्रगति कार्ड पर हस्ताक्षर करते समय श्री सिंह ने, जहाँ भी अहमद के अंक कुल अंकों से मात्र 1/2 या एक अंक कम थे, बढ़ा कर पूरे अंक कर दिए।

श्री सिंह का यह व्यवहार अन्य कक्षा के कार्यकलापों पर भी लागू हो गया। यदि किसी विद्यार्थी ने इस पक्षपात पूर्ण व्यवहार की शिकायत भी की तो श्री सिंह ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। इसके पश्चात् अहमद ने इस उदारता त्रुटि (leniency) का शोषण करना आरंभ कर दिया और चूँकि उसके संबंध श्री सिंह से अच्छे थे अतः उसने अन्य बच्चों को सताना आरंभ कर दिया। जब यह व्यवहार नवीं कक्षा तक चलता चला गया तो यह ध्यान में आया क्योंकि श्रीमती अग्रवाल इस प्रकार अंकों के बढ़ाए जाने के पक्ष में नहीं थी। इससे अहमद में कुंठा के भाव जागने लगे और फलतः वह अधिकाधिक उग्र (आक्रामक) होता चला गया।

4) **विस्थापन :** अनुपयुक्त मनोवेग (sentiments) या भावनाएँ (feeling) प्रायः विद्यालय के व्यक्तियों या वस्तुओं पर विस्थापित हो जाती हैं। उदाहरण के लिए, ''मैरी'' (एक छात्रा) यह स्पष्ट रूप से जानती थी कि वह मिस रूबी की कक्षा अर्थात् अपनी भौतिकी की कक्षा में प्रसन्न नहीं रहती थी। वह अध्यापक द्वारा पूछे गए किसी प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाती। मिस रूबी ने कक्षा में कभी भी मैरी की आवाज नहीं सुनी और प्रैक्टीकल की कक्षा में भी ऐसा ही होता था। वह अध्यापक से पूछने की बजाय अपने सहपाठियों से किसी प्रयोग का स्पष्टीकरण ले लेती थी। मिस रूबी ने कभी इसे असामान्य रूप में नहीं लिया। परंतु एक दिन जब वह बरामदे से गुजर रही थी, जहाँ मैरी का कमरा था तो वह यह देखकर आश्चर्यचकित हो गई कि मैरी कक्षा में जोर-जोर से कविता वाचन कर रही थी।

अगले दिन रूबी जानबूझ कर उस बरामदे में से कई बार गुजरी और यह जान कर और भी चकित रह गई कि मैरी सभी विषयों की कक्षा में सक्रिय रूप से भाग ले रही थी, सिवाय भौतिकी कक्षा के।

मैरी के माता-पिता से बातचीत करने के पश्चात् यह मालूम हुआ कि मैरी की सौतेली बहन का नाम भी रूबी था जिसके साथ उसकी कभी नहीं बनी। यही था मिस मैरी के असामान्य व्यवहार का कारण।

2.5.3 अनुशासित करने की नई विधियाँ

जब कोई अध्यापक/उपबोधक किसी विसामान्य (deviant) विद्यार्थी को अनुशासन में ढालना आवश्यक समझता है तो अन्य विद्यार्थियों जो इसके प्रत्यक्षदर्शी होते हैं पर भी इस विवाद का प्रभाव पड़ता है। इसे 'रिपल' या 'तरंग' प्रभाव कहते हैं। निम्नलिखित कारक तरंग प्रभाव को प्रभावित करते हैं :

1) **स्पष्टता :** 'स्पष्ट नियंत्रण' तकनीक वह होती है जिसमें विसामान्य बालक, विसामान्यता तथा अधिमान्य वैकल्पिक व्यवहार (preferred alternative behaviour) विशिष्ट रूप से दर्शाए गए हों। एक अध्यापक जो कक्षा में पीछे बैठे बच्चों में कुछ गड़बड़ देखता है और चिल्लाता है 'ऐ बच्चों बातें बंद करो' जब एक ऐसी नियंत्रण तकनीक का प्रयोग कर रहा है जिसमें कोई स्पष्टता नहीं होती है। जब सभी विद्यार्थियों को एक साथ टोका जाता है तो ऐसी अवस्था में विसामान्य बालक (deviant) भी निश्चित नहीं होते कि यह फटकार उनके लिए है या किसी अन्य के लिए।

   वही अध्यापक शोर करने वाले समूह के पास पीछे जाकर कह सकता था। ''अमरजीत, राजेश तथा जॉन, बातें बंद करो तथा और इन बीजगणित के प्रश्नों को पूरा करो।' इस आदेश की स्पष्टता उच्च है और श्रोता विद्यार्थियों पर भी वो लाभकारी प्रभाव डाल सकता है :

   क) वे इसके पश्चात् कम विसामान्य व्यवहार दर्शाएंगे।

   ख) उनके अधिगम संबंधी व्यवहार में विघ्न पड़ने की कम संभावना होगी जैसा कि अस्पष्ट तकनीक में होने की संभावना है।

2. **दृढ़ता :** 'मेरा सरोकार कार्य से है' इस प्रकार का आशय या गुण एक दृढ़ नियंत्रण तकनीक में निहित होता है। इसका संपादन अध्यापक की आवाज के लहजे से, हाव-भाव से या इशारों से हो सकता है। यह परिपालन विधि (follow through) से भी संभव है जिसका अर्थ है यह देखना कि अनुशासन संबंधी आदेश पूरे किए जाते हैं। पुनीत अपने पैन को बार-बार डेस्क पर मार कर खेल रहा था। इसके इस कार्य पर सभी सहपाठियों का ध्यान था और फलस्वरूप अध्यापक श्यामपट्ट पर क्या कर रहा है, इस बात की ओर किसी का ध्यान नहीं रहा। अध्यापिका ने एकदम लिखना छोड़ एक सख़्त आवाज़ में आदेश दिया 'पुनीत इस पैन को अपने बस्ते में रखो और इधर ध्यान दो'।

   अपना समस्त अवधान पुनीत पर केंद्रित करते हुए अध्यापक पुनीत को देखती रही कि वह अपने बैग की जेब को खोलता है, पैन को अंदर रखता है, इसे पुनः बंद करता है। जब पुनीत यह सब कार्य करने के पश्चात् अध्यापिका की ओर अभिमुख हुआ तभी अध्यापिका ने अपना कार्य पुनः आरंभ किया।

3) **संकेन्द्रण :** संकेन्द्रण नियंत्रण की दो तकनीकें हैं– i) अनुमोदन-संकेंद्रित तकनीक (Approval focuussed) तथा ii) कार्य-संकेन्द्रित तकनीक (taks- focussed)। अनुमोदन-संकेन्द्रित तकनीक अपने प्रभाव के लिए अध्यापक और विसामान्य बालक के बीच संबंध पर निर्भर करती है जबकि कार्य संकेन्द्रित तकनीक में अध्यापक की अपेक्षाओं तथा कार्य के बीच 'संयोजन' स्थापित किए जाते हैं।

अध्यापक द्वारा संकेन्द्रण-नियंत्रण तकनीकों के उपयोग के उदाहरण :

1) **अनुमोदन-संकेन्द्रित :** मुझे बड़ी निराशा हुई, जब मैंने आपको बातें करने से मना किया परंतु आप फिर भी चुप नहीं हुए। मेरा विचार था कि इन सब कार्यों की तुलना में आप मेरा आदर अधिक करते हो।

2) **कार्य-संकेन्द्रित :** "आपको चाहिए कि जब मैं पढ़ाऊं तो आप चुप रहें और सुनें, अन्यथा आप बाद में मेरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाएंगे। मैं इस पाठ को दुबारा नहीं पढ़ाऊँगा।"

साक्ष्य दर्शाते हैं कि अनुमोदन-संकेंद्रित तकनीकों की तुलना में कार्य-संकेंद्रित तकनीकें अपेक्षाकृत ज्यादा वांछित रिपट तरंग प्रभाव डालती हैं।

3) **संकेत अवरोध (Signal interference) :** बिना शब्दों का प्रयोग किए अध्यापक अपने तेवरों से या और कुछ संकेतों द्वारा अनुशासनभंजक विद्यार्थी को यह स्पष्ट कर देता है कि वह उसके विषय में जानता है कि वह क्या अनुचित व्यवहार कर रहा/रही है। उदाहरण के लिए, एक कुपित या क्रुद्ध मुद्रा का प्रयोग करना, उसकी सीट के निकट जाकर खड़े हो जाना इत्यादि।

4) **स्थानिक (भौतिक) सान्निध्य (समीपता) :** एक कक्षा का संचालन करते समय, समीपता का सिद्धांत भी काफी लाभकारी होता है। जैसे दोषियों को अध्यापक की कुर्सी के पास बिठाकर अध्यापक उनकी शरारतों पर नियंत्रण रख सकता है।

5) **अभिप्रेरणात्मक पुनरावेशन (Motivational recharging) :** कई बार अध्येता कक्षा में मात्र इसलिए अनुचित व्यवहार (शरारत) करते हैं क्योंकि नियमित कार्यक्रम से ऊब जाते हैं। ऐसी अवस्था में शिक्षण विधियों में कुछ परिवर्तन करना उपयुक्त होगा। उदाहरण के लिए, अध्यापक कक्षा के आरंभ में या उस के अंत में कुछ छोटे-छोटे खेल खिला सकता है ताकि विद्यार्थियों की अभिप्रेरणा को पुनःआवेशित किया जा सके। ये खेल हो सकते हैं : प्रश्नावली, भूमिका, अभिनय इत्यादि।

6) **हास-परिहासजन्य विश्रांति (comic relief) :** उस अवस्था में जबकि वे किसी समय कार्य से ऊब जाते हैं तो विद्यार्थियों को नियंत्रण में रखने की यह एक और विधि है। अध्यापक कुछ हंसी-मजाक की टिप्पणी कर सकते हैं और विद्यार्थियों को भी वैसी टिप्पणी करने के लिए उत्साहित कर सकते हैं।

7) **कार्योत्तर जाँच सत्र (Post-mortem Session) :** यदि कोई अध्यापक किसी बच्चे को अनुचित या अभद्र व्यवहार करते देखें तो वह तत्काल उस बच्चे को कुछ न कहें, मात्र सामान्य रूप से इतना कहें 'अपने व्यवहार को ठीक करें'। परंतु कक्षा समाप्ति पर वह अध्यापक उस विद्यार्थी को कक्षा से बाहर ले जाएँ तथा कक्षा में किए गए अनुचित व्यवहार के विषय में बच्चे से बातचीत करें। उस व्यवहार की पूर्ण विवेचना करें ताकि बच्चा यह समझ सके कि उसका व्यवहार वस्तुतः अनुचित था तथा ऐसा उसे नहीं करना चाहिए।

अपनी प्रगति की जाँच कीजिए

टिप्पणी :क) अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस खंड के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर मिलाइए।

9) संक्षिप्त रूप में व्याख्या कीजिए।

क) परस्पर विरोधी नियम

.....

.....

.....

ख) विस्थापन

.....

.....

.....

.....

ग) दृढ़ता

.....

.....

.....

.....

10) निम्नलिखित में से अनुशासन की सर्वोत्तम परिभाषा कौन-सी है?

क) आत्म-नियंत्रण तथा क्रमबद्ध आचरण विकसित करने के लिए दिया गया प्रशिक्षण।

ख) सत्ता को स्वीकार करना अर्थात् उसकी अधीनता में रहना।

ग) दिए गए नियमाधिनियम के प्रति अथवा एक बाह्य सत्ता के प्रति आंतरिक अनुशासन की भावना।

11) निम्नलिखित कथनों को सत्य और असत्य दो वर्गों में वर्गीकृत कीजिए :

क) अनुशासन के बिना अध्यापन तथा अनुशासन के साथ अध्यापन एक जैसी चीज़ है।

ख) बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण है कि वे अपने व्यवहार पर लगाए प्रतिबंधों के पीछे निहित तर्क को समझे।

ग) बच्चा जब भी अभद्र व्यवहार करें, उसे सदैव दंडित किया जाए।

घ) एक कार्य-संकेन्द्रित नियंत्रण तकनीक का तरंग प्रभाव एक अनुमोदन-संकेन्द्रित तकनीक विधि से अधिक होता है।

ङ) किसी बच्चे के अभद्र या अनुचित व्यवहार के संदर्भ में बच्चे की समस्या पर कक्षा से बाहर चर्चा करना अच्छा होता है न कि समस्त कक्षा के सम्मुख उसके व्यवहार के लिए उसे फटकारना।

2.6 निर्देशन और अन्य पाठ्यचर्या क्षेत्र

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (framework), 2005 में विद्यालय की पाठ्यचर्या में कला, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा को शामिल करने के महत्त्व पर बल दिया गया है। अधिकांश विद्यालय इन्हें पाठ्यचर्या का हिस्सा नहीं मानते। इसी कारण इस ओर ज्यादा ध्यान नहीं देते। प्रायः माना जाता है कि ये फुर्सत के समय किए जाने वाली मनोरंजक गतिविधियां हैं। और कभी-कभी विद्यालयों में सांस्कृतिक/खेल दिवस के रूप में आयोजित की जाती है। निर्देशन कार्यकर्ताओं और अध्यापकों को कला, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा को पाठ्यचर्या के ही क्षेत्र मानना चाहिए क्योंकि इनमें बच्चों के समग्र विकास हेतु योगदान का सामर्थ्य है।

कला शिक्षा

दृश्य और निष्पादन कक्षाओं (performing arts) को विद्यालय की पाठ्यचर्या का अभिन्न हिस्सा क्यों होना चाहिए?

''दूसरों के संबंध में स्वयं की खोज में, स्वयं की समझ का विकास और आलोचनात्मक सहानुभूति के लिए रंगमंच न केवल मनुष्यों में ही, बल्कि प्राकृतिक, भौतिक और सामाजिक विश्व में सर्वश्रेष्ठ माध्यम है (एनसीएफ 2005, पृष्ठ 54)।''

''बच्चों को किसी विषय-वस्तु को समझाने व स्पष्ट करने के लिए अध्यापकों द्वारा कई बार नाटकीकरण तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। लेकिन रंगमंच कला विधा का प्रयोग सीमित रूप में ही किया जा सकता है। ये अधिक सार्थक अनुभव भूमिका निर्वाह, रंगमंच अभ्यासों, में शरीर एवं स्वर की गति एवं नियंत्रण सामूहिक एवं सहज प्रदर्शन द्वारा संभव हो सकते हैं (एनसीएफ 2005)।''

स्वयं अपने हाथों से काम करना, सामग्री व तकनीकों का प्रयोग करना प्रक्रिया को समझने में, संसाधन संपन्न होने में, पहल करने, समस्या का समाधान करने में सहायता करते हैं। ये अनुभव बच्चों के लिए मूल्यवान होते हैं, और किसी अन्य अनुभव के पर्याय नहीं हो सकते। यह क्षेत्र समावेशी शिक्षा के लिए भी सार्थक व अनुरूप है'' (एनसीएफ 2005)।

कला के किसी रूप (संगीत, नृत्य, थियेटर कला (शिल्प) स्वयं के संज्ञानात्मक और सामाजिक दोनों के विकास में योगदान देते हैं। हालांकि, विद्यालयों में कला शिक्षा को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। विद्यालयों में विषय आधारित पाठ्यचर्या का अनुसरण करते हुए बच्चों के संज्ञानात्मक विकास पर ज्यादा बल दिया जाता है। विद्यालय द्वारा दी जाने वाली उपलब्धि परीक्षाओं में अच्छा निष्पादन न करने वाले बच्चों को पढ़ाई में कमज़ोर (नालायक) माना जाता है। उपलब्धि-परीक्षाओं में खराब निष्पादन से बच्चे का अपनी योग्यताओं के बारे में आत्मविश्वास धीरे-धीरे कम होने लगता है। विद्यालय की विषय-आधारित पाठ्यचर्या में बच्चों के भिन्न-भिन्न तरीकों से स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित नहीं किया जाता। उपलब्धि परीक्षण विद्यालय की एकमात्र अपेक्षित अभिव्यक्ति है जिसमें कुछ बच्चों का निष्पादन खराब हो जाता है। कला विधाओं का प्रयोग करके निर्देशन कार्यकर्ता और अध्यापक ऐसे बच्चे को दर्शा सकते हैं कि वह भिन्न-भिन्न तरीके से खोज और ज्ञान को अभिव्यक्त कर सकते हैं। इस प्रकार, वे उनकी संज्ञानात्मक योग्यताओं में विश्वास का समावेश करा सकते हैं।

भूमिका निर्वाह स्वयं की और दूसरों के साथ इसके संबंध का अन्वेषण करने का एक सशक्त साधन है। कुछ बच्चों को स्वयं के साथ और दूसरों के साथ सामाजिक और संवेगात्मक

समायोजना में सहायता की ज़रूरत हो सकती है। भूमिका निर्वाह के माध्यम से, निर्देशन कार्यकर्ता और अध्यापक ऐसे बच्चों की मदद कर सकते हैं, ताकि वे स्वयं की और स्वयं दूसरों के बीच संबंध की छानबीन की अभिव्यक्ति कर सकें। इस तरह, बच्चों को उनके सामाजिक-संवेगात्मक समायोजन व्यवहार में आने वाली बाधाओं का पता लगाने और खुशहाल जीवन के लिए उन्हें परिवर्तित करना सीखने योग्य बना सकते हैं।

स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा

यह पाठ्यचर्या का एक अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है जो बच्चों के सर्वांगीण शारीरिक कुशलक्षेत्र को प्रभावित करता है। अल्पपोषण और संचरणीय रोग कई बच्चों को स्वास्थ्य खतरे वाले बच्चों की श्रेणी में ले आते हैं। ''स्वास्थ्य बच्चे के समग्र विकास का सूचक होता है और यह नामांकन, विद्यालय में उपस्थित और पढ़ाई पूरी करने को प्रभावित करता है।'' (एनसीएफ 2005, पृ. 56)। बच्चों के शारीरिक, मानसिक, भावात्मक और मानसिक विकास के लिए निर्देशन कार्यकर्ता और अध्यापकों द्वारा उन्हें स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा प्रदान करना ज़रूरी है। अन्य सरोकार किशोरों के प्रजनन और यौन संबंधी स्वास्थ्य से संबद्ध रखते हैं। अतः निर्देशन कार्यकर्ता और अध्यापकों के किशारों की प्रजनन और यौन स्वास्थ्य संबंधी ज़रूरत पर ध्यान दिए जाने की ज़रूरत है। उचित निर्देशन के अभाव में किशोरों के शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य तथा उनके भावी जीवन के लिए खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

2.7 निर्देशन और यथातथ्य (आभासी) जगत

सोशल मीडिया हमारे आज के जीवन पर बहुत ज्यादा हावी है। बच्चे अपना अधिकांश समय इंटरनेट पर ब्राउजिंग में व्यतीत करते हैं और फेसबुक, इंस्टाग्राम या ऐसे अन्य सोशल मीडिया पर सक्रिय रहते हैं।

उपबोधन और वर्चुअल मीडिया

एक ही स्थान पर शारीरिक रूप से उपस्थित न रहते हुए भी आभासी जगत में एक-दूसरे के साथ अंतःक्रिया/बातचीत कर पाना उन्नत सूचना-संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के कारण ही संभव हो पाया है। माउस को क्लिक करके हम विश्वभर की सूचना प्राप्त कर सकते हैं। इसी तरह, माउस को क्लिक करके विश्वभर में सूचना प्रसारित भी की जा सकती है।

सोशल मीडिया

करोड़ों लोग फेसबुक, स्नैप चैट, ट्विटर, वाट्सएप, यू-ट्यूब आदि जैसे सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर एक-दूसरे के साथ अंतर्क्रिया करते हैं। पाठ्यपुस्तकों/टिप्पणियों/फोटो, श्रव्य और दृश्य रूप में प्रयोग-जनित वर्ण्य-विषय को तैयार करने व उससे दूसरों तक पहुँचाने/सूचित करने की सामर्थ्य रखने वाला सोशल मीडिया आज एक अत्यंत लोकप्रिय माध्यम है। सोशल मीडिया निःशुल्क मीडिया है जो किसी भी एजेंसी द्वारा सीधे नियंत्रित नहीं है। कई बच्चे इन सोशल मीडिया वेबसाइड का प्रयोग करते हैं और आभासी (वर्चुअल) समुदायों के साथऑन-लाइन जुड़कर अपना समय व्यतीत करते हैं। सोशल मीडिया पर लोग असंशोधित व असंमाजित विषय-वस्तु सृजित, शेयर (सांझा) और प्राप्त करते हैं। अतः निर्देशन कार्यकर्ताओं, अध्यापकों और अभिभावकों को सावधान व सतर्क रहने और शेयर और प्राप्त/निर्मित की जाने वाली विषय-वस्तु के बारे में उनका मार्गदर्शन करना चाहिए। सोशल मीडिया प्लेटफार्मों द्वारा प्राप्त होने वाली सूचना या जानकारी की विश्वसनीयता के बारे में पता लगाने में निर्देशन कार्यकर्ताओं और अध्यापकों को बच्चों की मदद करनी चाहिए।

साइबर धमकियाँ

इलेक्ट्रॉनिक संचार का प्रयोग करके किसी को डराना-धमकाना या तंग करना साइबर धमकियाँ (bullying) कहलाता है। साइबर जगत में ये बहुत आम बात है और कई बच्चे इसका शिकार भी हो जाते हैं। साइबर बुलिंग के शिकार को प्रायः इसके गंभीर परिणामों का सामना करना पड़ता है क्योंकि धमकाने के लिए प्रयुक्त की गई विषय-वस्तु (सामग्री) को आगे और लोगों के साथ भी शेयर किया जा सकता है और काफी समय तक उपलब्ध रहता है तथा यह कई अन्य तक पहुँचती रहती है। शिकार व्यक्तियों को इस दीर्घकालीन साइबर बूलिंग से निपट पाना कठिन हो जाता है। इससे उसका संतुष्टि स्तर निम्न हो जाता है, जिसके कारण वह भावात्मक व संवेगात्मक रूप में अस्थिर हो जाता है या अवसाद ग्रस्त हो जाता है और साइबर बूलिंग के शिकार व्यक्ति द्वारा अपनी जीवन-लीला को समाप्त कर लेना इसका चरम रूप है। अतः बच्चों को आभासी समुदाय सदस्यों के संभावित ऑनलाइन व्यवहार की जानकारी और उससे कैसे निपटा जाए, इनकी जानकारी दी जानी चाहिए। निर्देशन कार्यकर्ताओं, अध्यापकों को बच्चों में सहायता मांगने और पहली बार में ही साइबर बुलिंग से निपटने हेतु उनमें आत्मविश्वास जागृत करना चाहिए।

साइबर आचार-संहिता (आचार नीति)

बच्चों में नैतिक ऑनलाइन व्यवहार के बारे में जागरुकता पैदा करना एक अन्य महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। निदेशन कार्यकर्त्ताओं और अध्यापकों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। बच्चों के ऑनलाइन व्यवहार पर नज़र रखनी चाहिए क्योंकि सोशल मीडिया निःशुल्क और अनियंत्रित है। प्रत्येक व्यक्ति को किसी भी रूप में स्वयं को अभिव्यक्त करने की आज़ादी है। इस बेलगाम आज़ादी के कारण बच्चे गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार दर्शा सकते हैं और समाज की कानूनी और नैतिक व्यवस्था के साथ टकरा सकते हैं। अतः बच्चों को ऐसे अनैतिक और अस्वीकार्य ऑनलाइन व्यवहार के बारे में बताया जाना चाहिए और उन्हें इन व्यवहारों में लिप्त होने से रोकना चाहिए। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित ऑनलाइन व्यवहार अनैतिक और अस्वीकृत है :

- साइबर बुलिंग– जिसका अभिप्राय है, किसी भी इलैक्ट्रॉनिक रूप में ऐसी किसी भी विषय-वस्तु (सामग्री), को सृजित, पोस्ट या शेयर करना जिसका आशय दूसरे लोगों को चोट और हानि पहुँचाना हो।
- इंटरनेट के अनाधिकृत संसाधनों तक पहुँच।
- दूसरे लोगों की कम्प्यूटर फाइलों में जासूसी करना।
- दूसरे लोगों की कम्प्यूटर फाइलों को नष्ट करना या क्षति पहुँचाना।
- अन्य लोगों की निजता का सम्मान न करना।
- इलैक्ट्रॉनिक उपकरण के माध्यम से दूसरे लोगों की बौद्विक संपदा की चोरी करना।
- दूसरे लोगों के व्यक्तिगत आंकड़ों को हड़पना/अपनाना और जाली (झूठी) पहचान सृजित करना।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि साइबर प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का प्रयोग करने से जुड़े सामाजिक, कानूनी और नैतिक मुद्दों के प्रति सजग व सावधान रहना चाहिए। हमें अपने बच्चों को साइबर प्रौद्योगिकी के प्रयोक्ता के रूप में ईमानदारी, न्यायपूर्ण और जिम्मेदारी से कार्य करना सिखाना चाहिए।

2.8 सारांश

निर्देशन कार्यक्रम का विद्यालय के लिए योगदान इन रूपों में होता है– क) पाठ्यक्रम निर्माण में सहायक होना; ख) कक्षा में श्रेष्ठ अधिगम-अनुभव प्रदान करना; तथा ग) कक्षा अनुशासन संबंधी समस्याओं से निपटने के लिए विभिन्न तरीकों का सुझाव देना।

पाठ्यचर्या पर उन सभी सुनियोजित अधिगम अनुभवों के रूप में चिंतन किया गया है जो विद्यालय अपने विद्यार्थियों को प्रदान कर सकता है। इससे बच्चों की सामान्य तथा विशिष्ट दोनों प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए तथा सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकताएँ तथा अपेक्षाएं भी पूरी हो जानी चाहिए। एक उपयुक्त पाठ्यचर्या में उन सभी बातों को भी ध्यान में रखना चाहिए जो अधिगम प्रक्रिया के विषय में ज्ञात हैं। विद्यालयी विषयों के माध्यम से निर्देशन की समीक्षा की गई जिसमें मूल्य विकास पर विशेष बल दिया गया।

अधिगम को अनुभवों के माध्यम से व्यवहार में लाए गए परिवर्तन के रूप में समझा गया। अधिगम प्रक्रिया में व्यक्तित्व के बौद्धिक एवं शारीरिक दोनों पक्षों की आवश्यकता पड़ती है। अधिगम को सुकर बनाने के लिए कुछ मनोवैज्ञानिक कारकों, जैसे– अभिप्रेरणा, आवश्यकताएँ इत्यादि को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

किसी भी व्यक्ति को, जो कक्षा में पढ़ाने के आशय से जाता है चाहे वह कक्षा अध्यापक हो, विषय अध्यापक हो, उपबोधक हो अथवा कोई अन्य आमंत्रित व्यक्ति को, यह भली-भांति विदित होता है कि यदि कक्षा अनुशासित हो तो अध्यापन सरल हो जाएगा। अनुशासनहीनता उस समय उत्पन्न होती है जब या तो व्यक्ति नियमों से अनभिज्ञ हो या नियम परस्पर विरोधी हों, बच्चे कुंठित रहते हों या फिर भाव विस्थापन (feeling displacement) घटित हो गया हो। इन अवस्थाओं को मैरी का उदाहरण देकर स्पष्ट किया गया है। स्पष्टता, दृढ़ता तथा संकेन्द्रण इत्यादि उन कुछ तकनीकों के उदाहरण हैं जिनके द्वारा कक्षा में अनुशासन कायम रखा जा सकता है अथवा स्थापित किया जा सकता है।

हमने यह भी चर्चा की है कि किस प्रकार कला, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा का प्रयोग करके निर्देशन कार्यकर्ता बच्चों की भावात्मक जरूरतों और विकास से निपट सकते हैं। चर्चा का अन्य महत्त्वपूर्ण मुद्दा था– विद्यालय के बच्चों द्वारा नए युग के मीडिया का प्रयोग किया जाना। बच्चों को इन नवीन मीडिया प्रौद्योगिकियों से जो खतरे या नुकसान हो सकते हैं, उनसे निपटने में निर्देशन कार्यकर्ताओं और अध्यापकों द्वारा बच्चों की सहायता करने का महत्त्व।

2.9 इकाई के अंत में अभ्यास कार्य

1) किसी कक्षा का दौरा करें और किसी कक्षा की आवश्यकताओं की पहचान करें, जो एक संगत के सार्थक पाठ्यचर्या का प्रथम मानदंड है। विद्यालय के कार्यकलापों का अवलोकन करें और मालूम करें कि पाठ्यचर्या किन-किन आवश्यकताओं की पूर्ति कर रही है तथा कौन-सी आवश्यकताएँ पूर्ण नहीं हो रही। एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

2) किसी एक कक्षा का अवलोकन करें तथा मालूम करें कि किस प्रकार के अनुशासन में अध्यापक का व्यक्तित्व एक महत्त्वपूर्ण घटक है।

3) किसी एक ऐसे विद्यार्थी का अवलोकन करें जो अनुशासन संबंधी समस्याएँ उत्पन्न कर रहा है। इस विद्यार्थी के उदाहरण की सहायता से या इस संदर्भ में उन सभी प्रश्नों के उत्तर तैयार कीजिए जो ऊपर उप-इकाई ''अनुशासन'' के अंतर्गत अनुशासन संबंधी समस्याओं के परिचालन के लिए दी गई निर्देशिका में पूछे गए हैं।

4) निर्देशन और पाठ्यचर्या को समाकलिक (संघटित) करने की आवश्यकता हमें क्यों पड़ती है?

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY